CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH 11

|| the gurukul ||

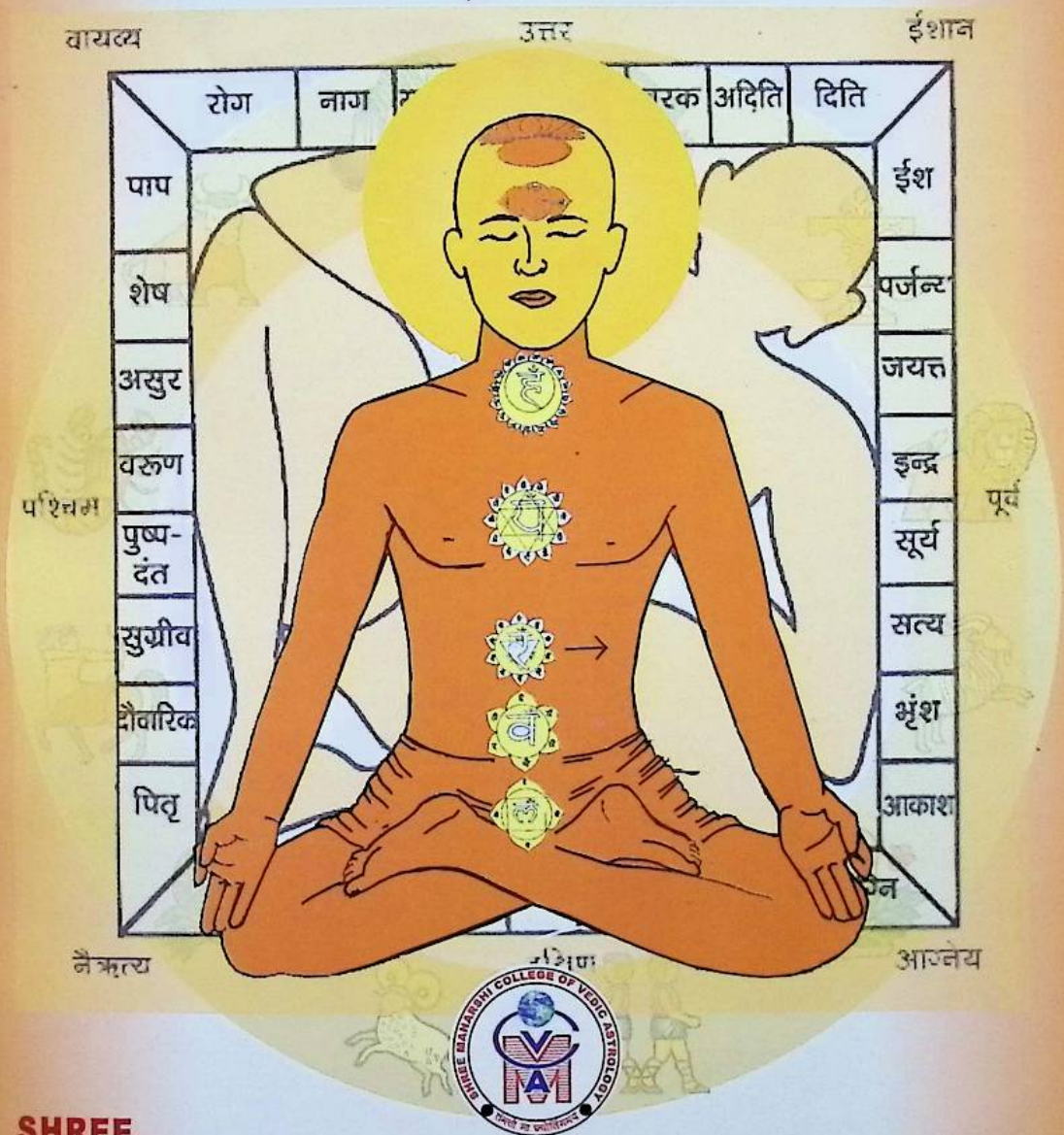

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 11

अनुक्रमणिका

अध्याय 1	:	विवाह रेखा	03–25
अध्याय 2	:	शुक्र रेखा	26–39
अध्याय 3	:	फेस रिड़िंग	40–77
अध्याय 4	:	आंखे (नेत्र)	78–103

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाह रेखा

इस पृथ्वी पर प्राणियों में सबसे सर्वश्रेष्ठ कृति मानव है। केवल मानव ही गृहस्थ हो परिवार की संरचना करता है तथा उसमें चार आश्रमों की व्यवस्था की गई है। पूर्व जीवन को

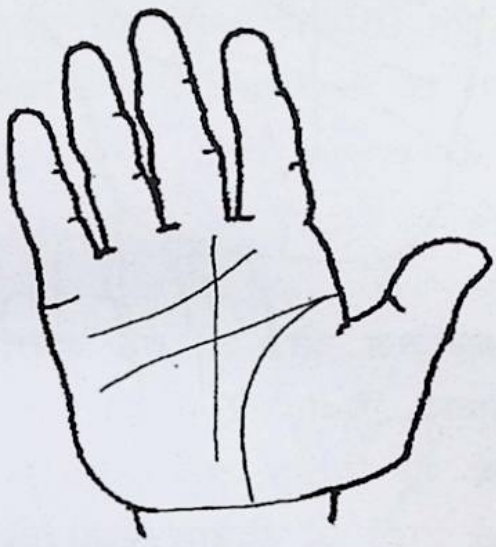

व्यवस्थित करने और वंश वृद्धि के लिये विवाह संस्कार का प्रावधान निर्मित किया। मनुष्य इस पृथ्वी लोक में अकेले नहीं रह सकता अतः विपरित लैंगिक आकर्षण जो दाम्पत्य जीवन मे पड़कर विवाह रूपी संस्कार का पालन करती है। साथ ही वंश वृद्धि का कारक भी बनती है। इसी विवाह संस्कार के लिये मानव के हाथों में बुध क्षेत्र से लगी हुई करतल में पाई जाने वाली रेखा विवाह रेखा का प्रावधान है। इसी रेखा को कई नाम दिये गये है, इसे अनुराग रेखा, प्रेम रेखा, जीवन साथी रेखा, आसक्ति रेखा है।

प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन से ज्ञान होता है कि बुध क्षेत्र में करतल से निकलने वाली रेखा विवाह रेखा होती है परन्तु प्रायः देखने में केवल एक रेखा न होकर कई रेखाएं होती है जो काफी असमंजस पैदा करती है क्योंकि प्राचीन समय में बहु पत्नि प्रथा थी। परन्तु आज के पर्यवेक्ष में यह तथ्य निर्थक है जितनी रेखाएं उतने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाह संभव नहीं है। बाद मे आधुनिक विचारकों व अध्ययन से इसमें केवल एक ही सबंल है एक ही रेखा को विवाह रेखा माना गया बाकि रेखाएं विपरित लिंग के प्रति आकर्षक व आसक्ति मात्र का प्रतीक है।

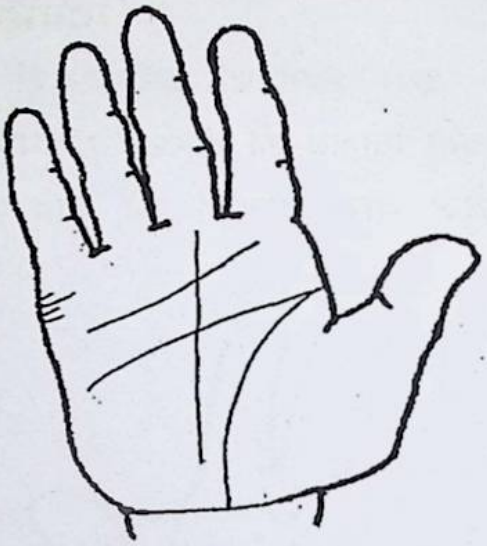

असमंजस ओर भी बढ़ जाता है जब विवाह रेखा होने के बाद भी विवाह नहीं होता व कई हाथों में विवाह रेखा के न होने के उपरांत भी विवाह होता है। इन दोनों परिस्थतियों में हस्त रेखा संबंधी सभी फल कथन निष्फल हो जाते है।

इन परिस्थतियों का सूक्ष्म अध्ययन करने पर पाया गया है कि शुक्र व चंद्र क्षेत्र से निकलने वाली प्रभावी रेखाएं, भाग्य रेखा व सूर्य रेखा के साथ संयोग कर इसी रेखा (विवाह रेखा) के गुणों को प्रदर्शित करती है। साथ ही अविवाहित होने के उपरांत भी विवाह रेखा की उपस्थिति, दरअसल उससे प्रभावित अनुयायियों या शिष्यों की संख्या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होती है। जातक संप्रदाय का संस्थापन अथवा साधु होता है। अतः ध्यान रखना चाहिये की केवल विवाह रेखा के लक्षणों के आधार पर, वैवाहिक स्थिति की पूर्ण जानकारी नहीं प्राप्त की जा सकती।

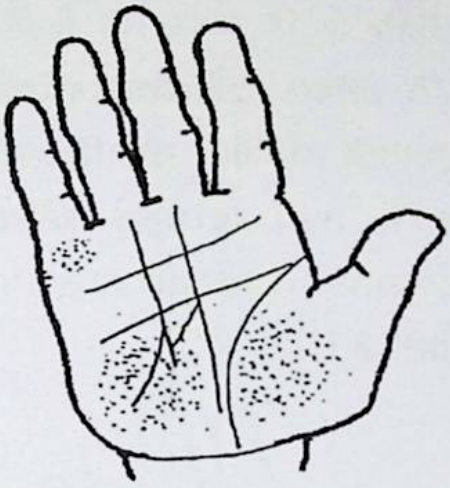

उसके लिये जातक के शुक्र क्षेत्र व चंद्र क्षेत्र की प्रभाव रेखाओं का भाग्य रेखा व सूर्य रेखा के साथ संबंध भी मायने रखता है। इन सब के अलावा भी विवाह रेखा के साथ हाथ में स्थित ग्रहों व पर्वत क्षेत्रों की स्थिति व प्रधानता जातक

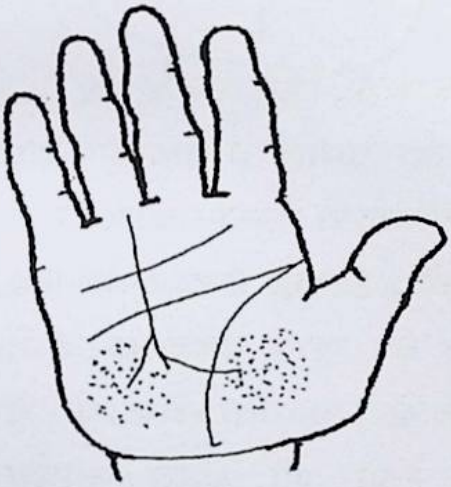

की मनोवृत्तियों को परिवर्तित कर विवाह संबंधों में निर्णायक भूमिका रखती है।

जैसे गुरू प्रधान वाले जातक सिद्धांतवादी तथा विवाह संबंधों को तुरन्त मान्यता देते है। अतः कम उम्र में विवाह व सुखी दाम्पत्य जीवन वाले होते है।

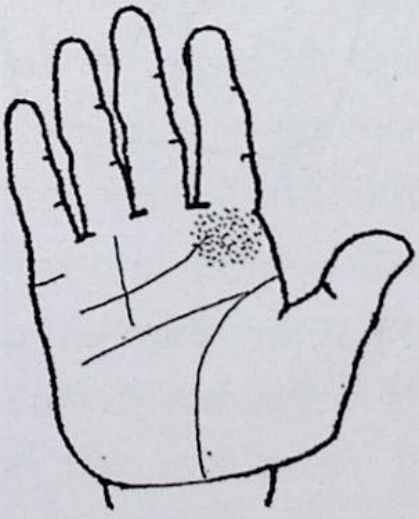

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि प्रधान जातक को एकांकी व देरी से विवाह करने वाले तथा दांपत्य जीवन में टकराहट व कड़वे अनुभव प्राप्त होते है।

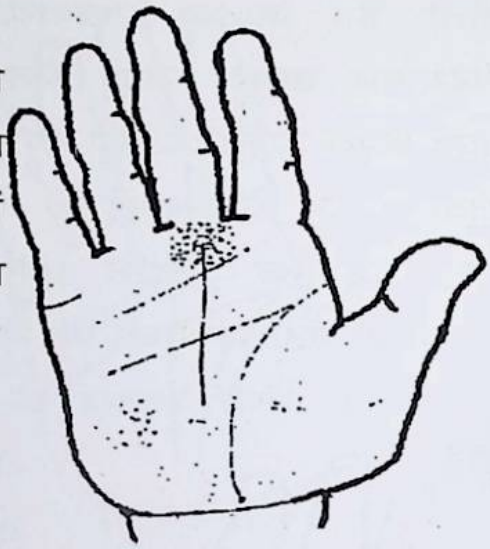

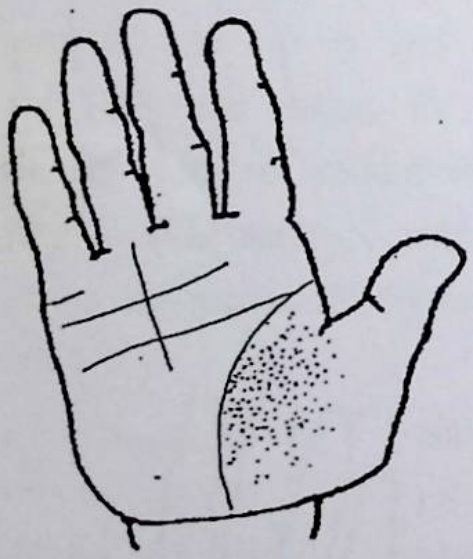

शुक्र प्रधान व चंद्र प्रधान सौम्य व सुन्दर होते है व शीघ्र विवाह कर सम्पूर्ण दांपत्य जीवन का सुख प्राप्त करते है अर्थात ऐसे जातक के हाथों में छोटी रेखा भी बहुत महत्व रखती है।

जैसा कि हमने अन्य रेखाओं को वर्गीकृत कर विस्तृत अध्ययन किया है, उसी प्रकार इसका भी अध्ययन करेंगे।

(I) विवाह रेखा का प्रारंभ स्थल

1. करतल से प्रारंभ

विवाह रेखा यदि करतल से प्रारंभ होकर बुध क्षेत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में प्रविष्ट होती है। साथ ही ये रेखा जितनी सीधी होती है उतनी ही शुभ कारक व सफल वैवाहिक जीवन की द्योतक हैं।

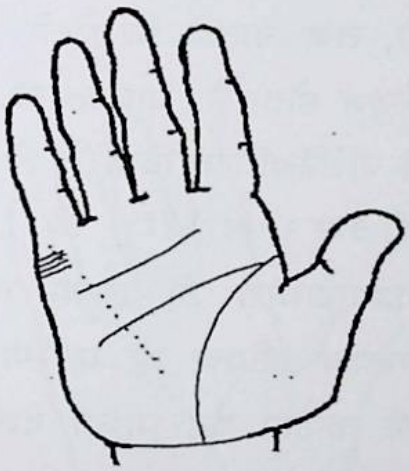

2. केवल बुध क्षेत्र में उत्पन्न आड़ी रेखाएं

इस तरह की रेखाएं शुभ नहीं होती क्योंकि ये बुध क्षेत्र से निकलने वाली स्वास्थ्य रेखा को काट कर दूषित प्रभाव उत्पन्न करती है।

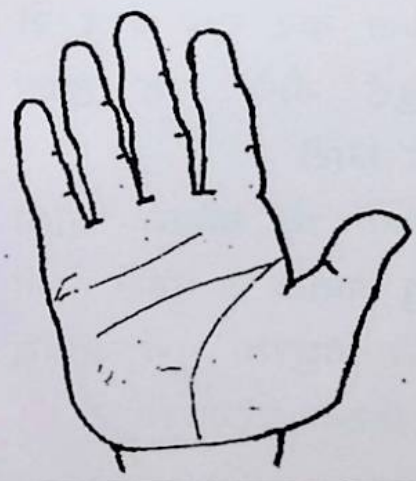

3. हृदय रेखा से उत्पन्न विवाह

रेखा ऊपर उठ कर अलग हो जावे ऐसी विवाह रेखा वाला जातक कम उम्र में विवाह के बंधन में बंध जाता है और आगे जाकर दांपत्य जीवन में कड़वाहट अथवा मन–मुटाव हो, संबंध विच्छेद या तलाक तक पहुंच जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. विवाह रेखा शनि क्षेत्र तक पहुंचे व भाग्य रेखा पर क्रास का चिन्ह हों

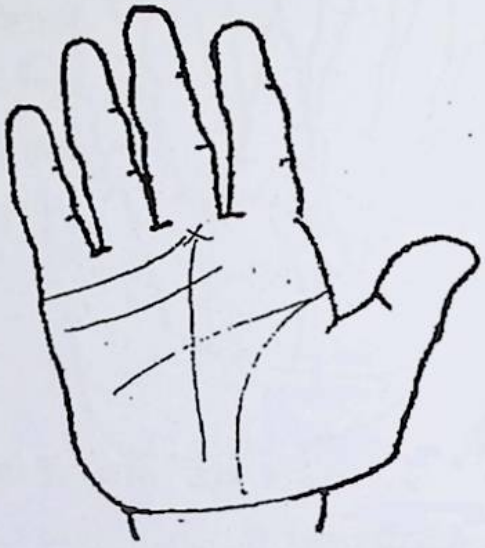

जातक की विवाह रेखा लंबी हो शनि पर्वत पर पहुंचे तथा भाग्य रेखा को कांटे या भाग्य रेखा पर अशुभ क्रास का चिन्ह हो, तब जातक के लिये अत्यंत अशुभ होता है। जातक के जीवन में परिस्थितियां विपरित हो अपने जीवन साथी के साथ विश्वासघात हो हत्या की नौबत तक पहुंच जाती विकट दाम्पंय जीवन के कारण जातक को कारावास व मृत्यु दंड़ की कगार पर पहुंचा देती है।

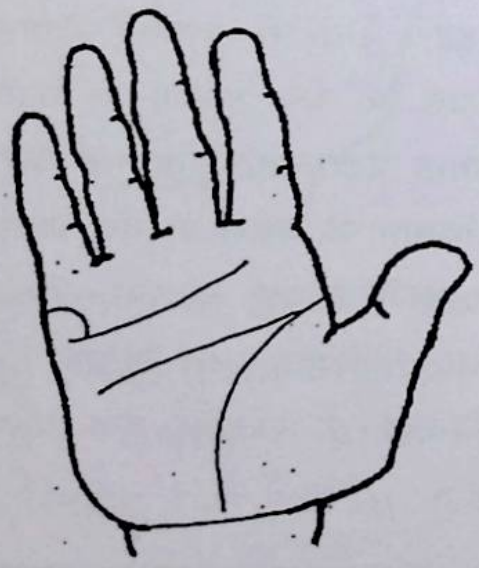

5. विवाह रेखा करतल से निकल कर बुध क्षेत्र से होती हुई नीचे मुड़ हृदय रेखा से मिले

जातक के जीवन साथी की मृत्यु जातक से पहले होगी और उसें विधुरता पूर्ण जीवन व्यापन करना पड़ेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि ढ़लान पर क्रास या द्विप का चिन्ह हो तो जीवन साथी की मृत्यु रोग से या दुर्घटनावश होगी।

6. विवाह रेखा शुक्र क्षेत्र तक पहुंचे

विवाह रेखा लंबी हो शुक्र क्षेत्र पर पहुंचे यह जातक के लिये अशुभ है ऐसा जातक दुःखी दाम्पत्य जीवन वाला हो आगे चलकर संबंध विच्छेद या तलाक ले लेता है।

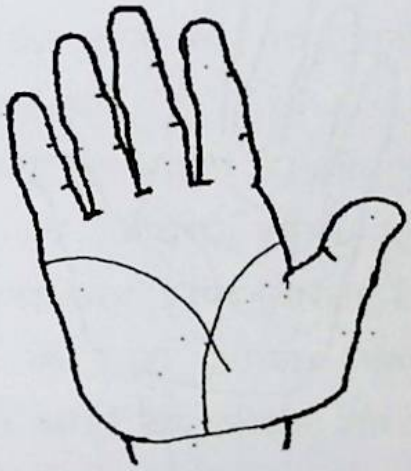

7. विवाह रेखा उपर की ओर पहुंच कनिष्ठिका के मूल में पहुंचे

विवाह रेखा कनिष्ठिका के मूल में पहुंचे ऐसा जातक जीवन भर अविवाहित रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. विवाह रेखा का समापन मंगल के मैदान मे हो

विवाह रेखा मंगल क्षेत्र में पहुंचे तो जातक उग्र स्वभाव का होता है। उसके साथ जीवन निर्वाह करना मुश्किल हो जाता है। यह दुःखी वैवाहिक जीवन की परिचायक है।

9. विवाह रेखा मुड़कर अंत पर अंकुश बनावे

जातक उग्रता वश प्रेम संबंध बना लेता है परंतु आगे जाकर उनका अंत हो जाता है।

10. विवाह रेखा उच्च मंगल में पहुंचे व क्रास का चिन्ह हो

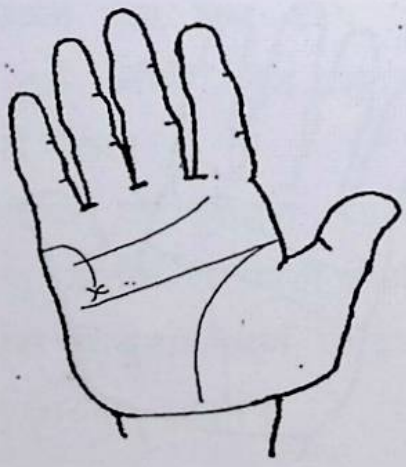

ऐसा जातक उग्र संवेदनाओं के कारण, अपने जीवन साथी के साथ मधुर संबंध नही रख सकता, जिसकी परिणति किसी दुर्घटना अथवा ईर्ष्यावश गलत कारकों से हो, जीवन साथी के असहयोग या लांछन से हो है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(II).विवाह रेखा का समापन स्थल

1. विवाह रेखा बड़ कर सुर्य क्षेत्र तक पहुंचे

यदि विवाह रेखा सुधड़ लंबी हो कर सूर्य पर्वत पर पहुंचे तब जातक उच्च कुल में विवाह करता है तथा विवाह उपरांत मान प्रतिष्ठा व धन संपदा प्राप्त करता है।

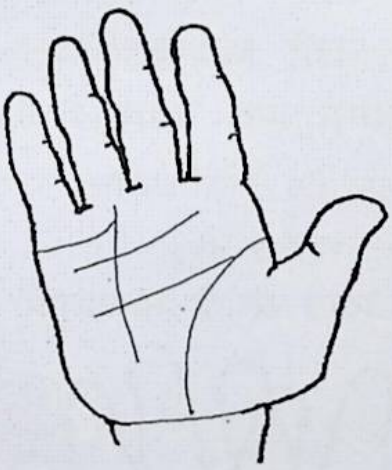

2. विवाह रेखा आगे चल कर सूर्य रेखा से स्पर्श करें

यह अत्यंत शुभ लक्षण है। जातक विवाह के बाद जीवन साथी के कारण मान प्रतिष्ठा प्राप्त करता है परन्तु स्वयं के द्वारा अर्जित नहीं होता है सदैव अपने को जीवन साथी के प्रभाव में बाधित पाता है।

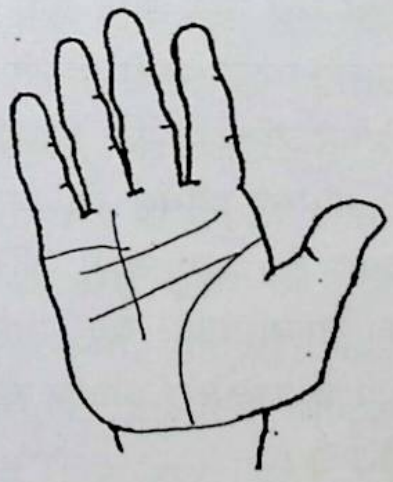

3. विवाह रेखा आगे चल कर सूर्य रेखा को काटे

यह अशुभ लक्षण है। जातक का विवाह कुल में होता है। विवाह के कारण प्रतिष्ठा पर आंच आती है तथा परेशानियां व दुःख भोगना पड़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(III). विवाह रेखा एवं ग्रह प्रदेश

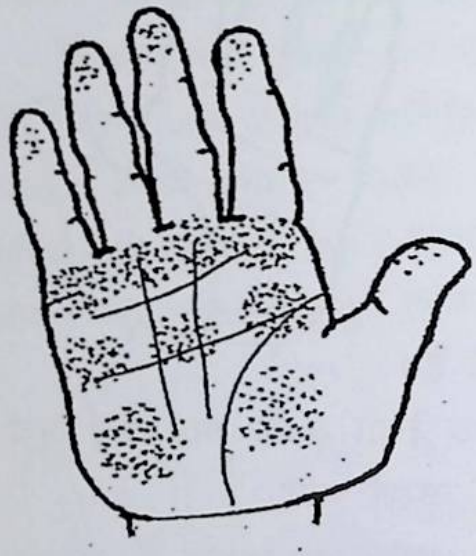

हथेली की प्रमुख रेखाओं अथवा गौण रेखाओं की स्वयं की स्थिति सुदृढ़ व स्पष्ट होने के उपरांत भी हाथों में स्थित ग्रह पर्वत क्षेत्र की स्थिति, समतल, उन्नत, सपाट अथवा धंसे हुये होने पर जातक के भविष्य का फल कथन निर्भर होता है। उसी प्रकार विवाह रेखा के साथ ग्रह पर्वत क्षेत्रों की स्थिति से प्रभाव पड़ता है।

1. गुरू प्रदेश व विवाह रेखा

विकसित गुरू प्रदेश के साथ जातक विवाह संबंधी मान्यतओं को मानने वाले होने से विवाह शीघ्र कर लेते है वे इस कार्य में आना–कानी नहीं करते। उनका विवाह संस्कारों पर निर्धारित होने से दांपत्य जीवन भी अनुशासित रहता है। अतः सभी रीति रिवाजों व मान्यताओं का आदर कर आदर्श दाम्पत्य जीवन के पक्षधर होते है।

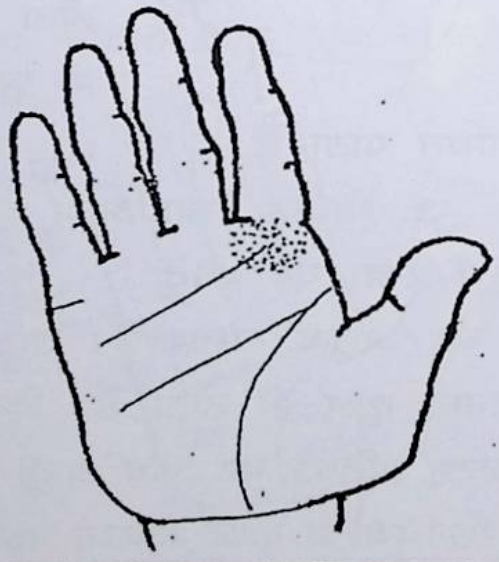

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. शनि प्रदेश एवं विवाह रेखा

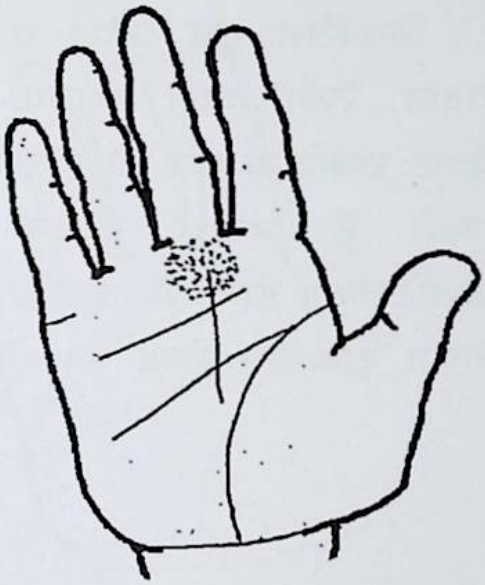

विकसित शनि प्रदेश के साथ जातक विवाह से चिढ़ते है। ये विवाह बहुत अधिक दबाव व अन्य प्रभाव से ही करते है आयु की मध्य अवस्था में विवाह होने से दाम्पत्य जीवन में टकराहट होती है दाम्पत्य जीवन कड़वाहट भरा होता है। यदि शुक्र प्रदेश भी उन्नत हो तो, कामवासना की पूर्ति कर जीवन भर अविवाहित भी रह सकते है।

3. सूर्य प्रदेश एवं विवाह रेखा

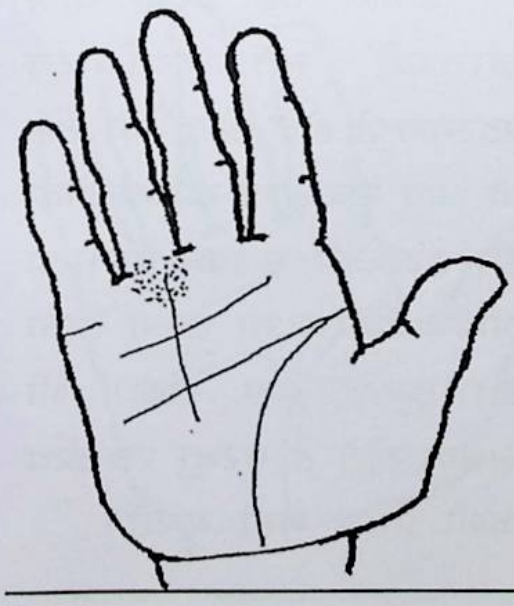

सूर्य प्रधान जातक शीघ्र विवाह करते है। परन्तु उनका विवाह प्रतिष्ठित कूल मे होने से उन्हें भी वही मान प्रतिष्ठा प्राप्त होती है परन्तु स्वयं दिखावे व अनुशासित रहने से जीवन साथी में सदैव अच्छाई ढूढ़ते है और थोड़ी भी कमी बर्दाश्त नहीं कर सकने से दाम्पंत्य जीवन परेशानियों वाला बना बैठते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. बुध प्रदेश एवं विवाह रेखा

विकसित बुध प्रदेश व विवाह रेखा वाले जातक विवाह संबंधो में धन लोलूपता रखते है परन्तु स्वस्थ मानसिकता होने से दांपत्य जीवन सुखमय होता है।

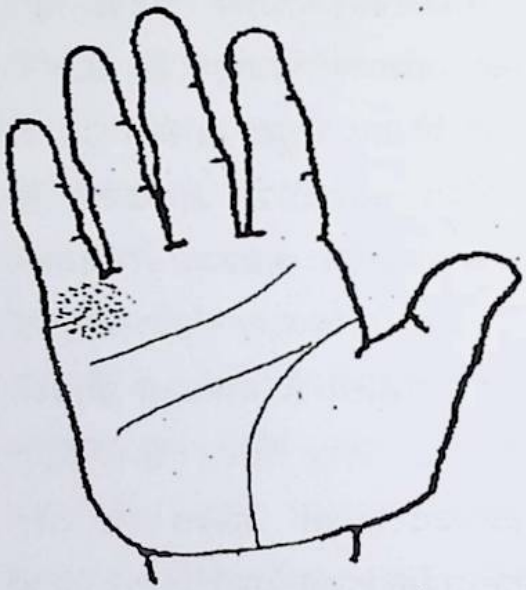

5. चंद्र प्रदेश एवं विवाह रेखा

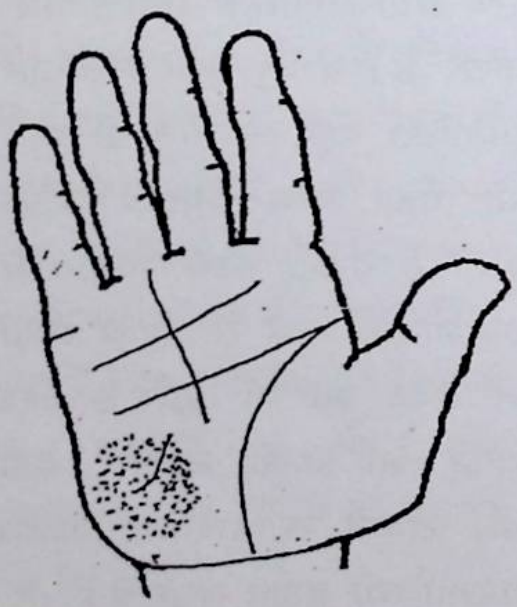

उन्नत चंद्र प्रदेश वाले जातकों का व्यक्तित्व रहस्यमयी होने से इनके मन के भाव समझना कठिन होता है। इसलिये इनका दाम्पत्य जीवन विशिष्टता वाला होता है। इनके प्रेम संबंध भी अनेक होते हैं परन्तु स्थाईत्व कभी प्राप्त नहीं करते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. मंगल क्षेत्र व विवाह रेखा

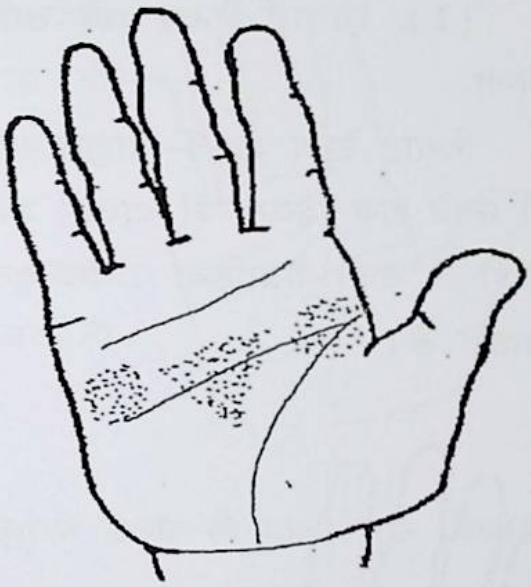

मंगल क्षेत्र में तीन प्रधान क्षेत्र में से सभी या कोई एक उन्नत या विकसित होने पर जातक उग्र व गुस्सेल स्वभाव का होता है। इनके साथ जीवन साथी की सहन शक्ति ही सदैव दांपत्य जीवन की नींव होती है अन्यथा मतभेद संबंध विच्छेद तक पहुंच सकते है।

7. शुक्र क्षेत्र व विवाह रेखा

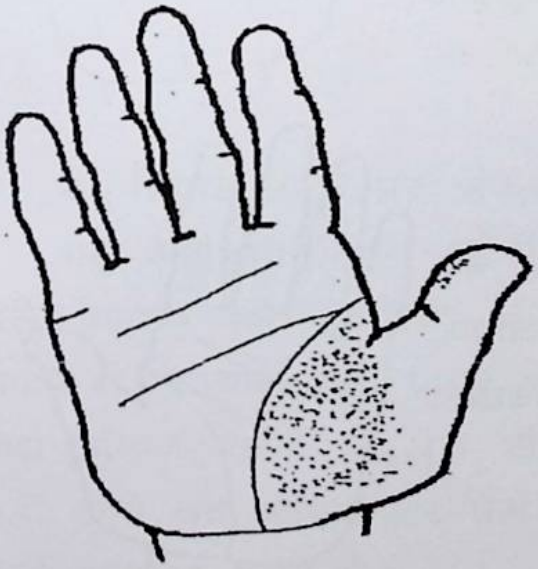

शुक्र क्षेत्र प्रधान जातक मनमोहक व्यतिव वाले होने से उन्हें जल्द ही विवाह के लिये विवश कर दिया जाता है। ये सौंदर्य के उपासक व कलाप्रिय होने से सुखद व मधुर दाम्पत्य जीवन व्यापन करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(IV). विवाह रेखा का स्वरूप व दोष

(1). विवाह रेखा का खण्ड़ित होना

विवाह रेखा चलते– चलते खण्ड़ित हो जावे तब विवाह में बाधाएं उत्पन्न होती है तथा वैवाहिक संबंध टूट भी सकते है।

(अ) खण्ड़ित हो एक दूसरे के ऊपर ही–जातक के विवाह मे बाधा आती है परन्तु कुछ समय बाद दूर हो जाती है तथा संबंध मधुर हो जाते है।

(ब). खण्ड़ित हो हृदय रेखा की ओर मुड़ी हो तो जातक के जीवन साथी की बिमारी के कारण बिछौह तथा मृत्यु भी हो सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. विवाह रेखा पर छोटी–छोटी शाखाएं

यदि विवाह रेखा पर छोटी–छोटी रेखाएं हो एवं जातक स्त्री हो तो उसकी उतनी सौतनें होती हैं परन्तु आधुनिक पर्यवेक्ष में जातक का प्रेम इतने लोगों में बटता है कि उसके पास जीवन साथी के लिये समय ही नहीं रहता।

3. आड़ी रेखा से कटी हुई विवाह रेखा

जातक के जीवन मे बाधाएं उत्पन्न होती है तथा ये बाधाएं आर्थिक, सामाजिक व बिमारियों से संबंधित होती है।

4. विवाह रेखा पर अंकुश

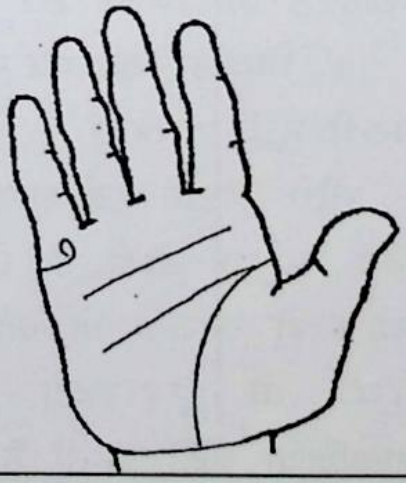

यह अशुभता प्रदान करती है ऐसे जातक को वैवाहिक जीवन साथी से सहयोग नहीं प्राप्त होगा तथा जीवन साथी से प्रेम संबंध नहीं रहते वह जीवन भर प्रेम के लिये तरसता रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

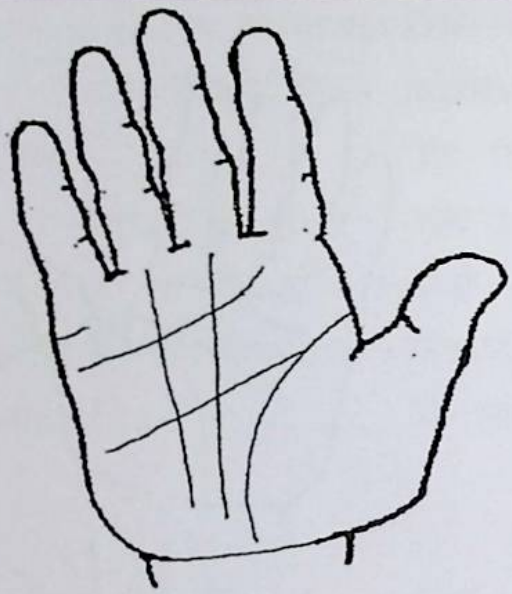

5. विवाह रेखा तथा मुख्य रेखाएं

विवाह रेखा का उत्पत्ति स्थल व स्वयं विवाह रेखा एक छोटी रेखा है इसका अन्य रेखाओं से प्रत्यक्ष कोई संबंध नही है। प्रभावी रेखा अवश्य संबंध रखती है। जिन्हें हम आगे विस्तृत रूप में देखेंगे।

6. विवाह रेखा एवं प्रभावी रेखाएं

विवाह रेखा सीमित क्षेत्र में होने से मुख्य रेखाओं व पर्वत क्षेत्रों से प्रत्यक्ष रूप में कोई संबंध नही बनाती परन्तु प्रभावी रेखाएं इनसे मिल संगति व विसंगतिया निर्मित करती है जो निम्न है।

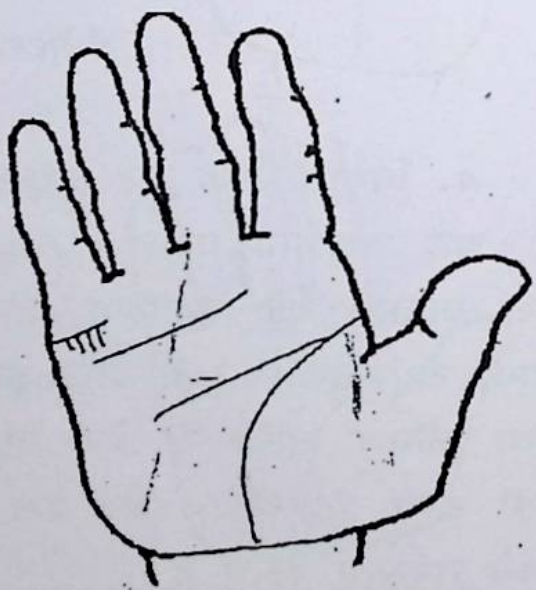

1. विवाह रेखा पर नीचे गिरती हुई शाखाएं

नीचे गिरती हुई शाखाएं सदैव अशुभ होती है ऐसी स्थिति में जातक के जीवन साथी के स्वास्थ्य की परेशानियां बनी रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. विवाह रेखा दो शाखाओं में विभक्त हो तथा प्रभावी रेखा मंगल के मैदान तक पहुंचे

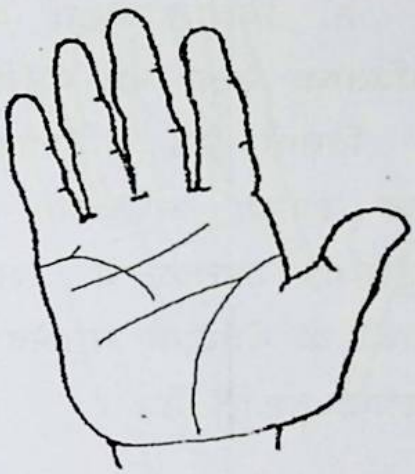

ऐसी स्थिति में जातक के दाम्पत्य संबंधों में दरार उत्पन्न होती है तथा संबंध विच्छेद हो तलाक हो जाता है।

3. विवाह रेखा दो शाखाओं में हो हृदय रेखा तक पहुंचे

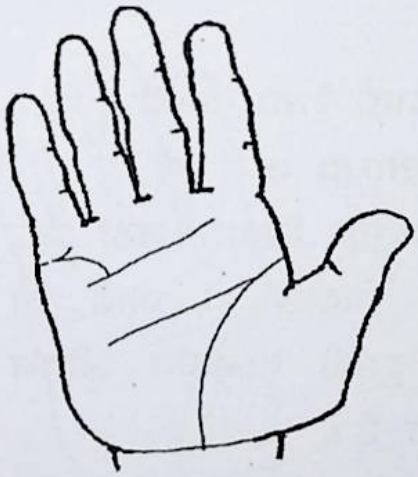

ऐसी स्थिति में जातक की हृदयहीनता व क्रुरता तलाक व संबंध विच्छेद के लिये उत्तरदायी होती है।

4. विवाह रेखा का प्रारंभ व अन्त पर दो शाखाओं में विभक्त होना

ऐसी परिस्थिति में विवाह के बाद दाम्पत्य जीवन में स्थाई स्थिरता नहीं होती। परिस्थितियां कुछ ऐसी निर्मित करती है की पति, पत्नि साथ में रह नहीं पाते। परन्तु उनके मन मिले रहते है वियोग की पीड़ा सदैव बनी रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. विवाह रेखा की शाखा मस्तिष्क रेखा पर पहुंचे

विवाह रेखा द्विशाखा हो व एक शाखा मस्तिष्क रेखा पर पहुंचना, जातक व उसके जीवन साथी के बौद्धिक मतभेद के कारण तलाक दर्शाते है।

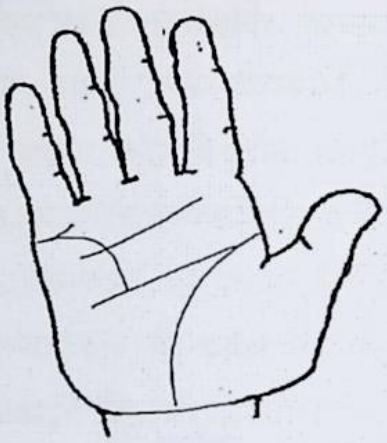

6. विवाह रेखा जंजीर युक्त हो और द्विशाखा अंत हो

ऐसा जातक विवाह नहीं कर सकता यदि विवाह हो जावे तो जीवन भर दुःखी दाम्पत्य जीवन निर्वाह करता है।

7. विवाह रेखा से शाखा निकलकर सूर्य रेखा को स्पर्श करें

जातक प्रतिष्ठित कुल में विवाह कर धन, सम्पदा व मान सम्मान प्राप्त करता है।

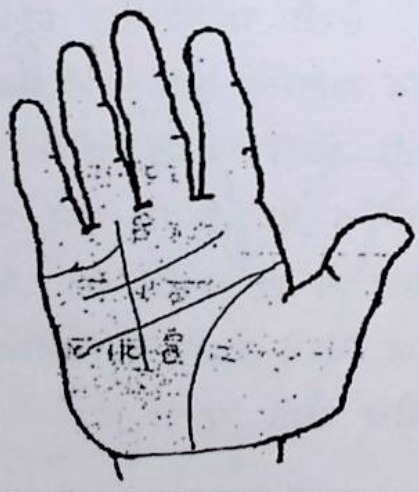

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. विवाह रेखा से शाखा निकलकर सूर्य रेखा को काटे

यह दुर्भाग्य कारक है। जातक विवाह उपरांत अपनी प्रतिष्ठा व मान सम्मान खो देता है व आर्थिक परेशानियों से घिर जाता है।

9. शुक्र क्षेत्र से प्रभावी रेखा निकलकर विवाह रेखा को काटे

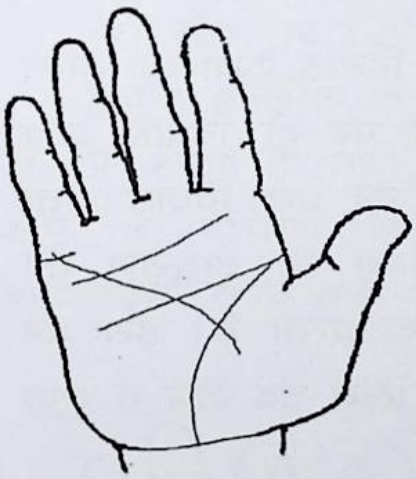

जातक को परिवार वालो व संबंधियों द्वारा विवाह में बाधा उत्पन्न होती है जो आगे भी जीवन भर परेशानियां उत्पन्न कर दाम्पत्य जीवन को दुःखी करते है। जातक अपने लोगों से ही परेशान रहता है।

10. विवाह रेखा के समानान्तर रेखा

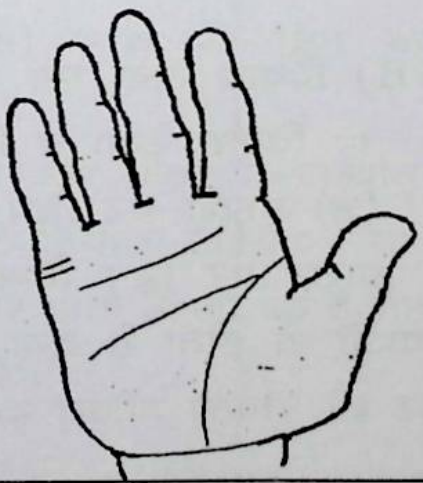

कोई प्रभाव रेखा के समानान्तर हो तब जातक विवाह होने के बाद भी विपरित लिंग के साथ प्रेम संबंध कायम रखता है जो जीवन पर्यन्त चलते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. विवाह रेखा को बुध क्षेत्र की लम्बवत रेखा काटे

जातक के विवाह में बाधा आती है तथा विरोधी विवाह में अवरोध उत्पन्न करते है।

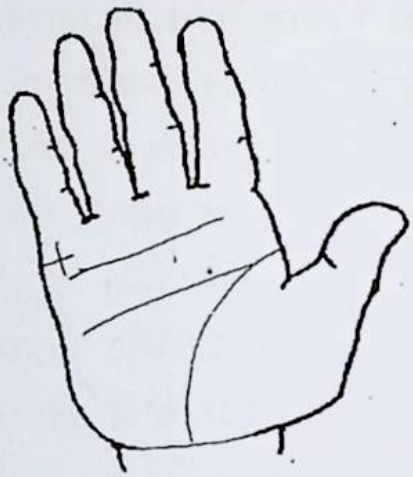

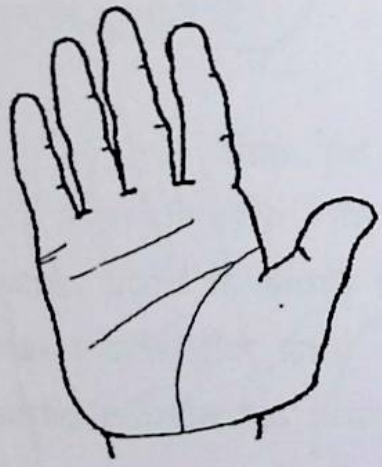

12. दो विवाह रेखा का होना

बुध क्षेत्र पर दो विवाह रेखा होना जातक का एक विवाह होता तथा प्रेम संबंध या अनुराग की रेखा को पुष्ट करती है। इस की पूर्ण दृष्टि के लिये चंद्र क्षेत्र व शुक्र क्षेत्र को भी देखना आवश्यक है।

(VII) विवाह रेखा एवं शुभ चिन्ह

1. विवाह रेखा व द्विप चिन्ह

(अ) प्रारंभ पर द्विप चिन्ह

प्रारंभ पर द्विप चिन्ह अशुभ है विवाह परेशानियों व बाधाओं से होता है तथा बाद में स्थिति सामान्य होती है फिर भी दांपत्य जीवन कष्टपूर्वक ही रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ब) अंत पर द्विप चिन्ह

विवाह नजदीक के रिश्तेदार से ही होता है तथा आर्थिक रूप से दांपत्य जीवन में कठिनाईयां सदैव बनी रहती है।

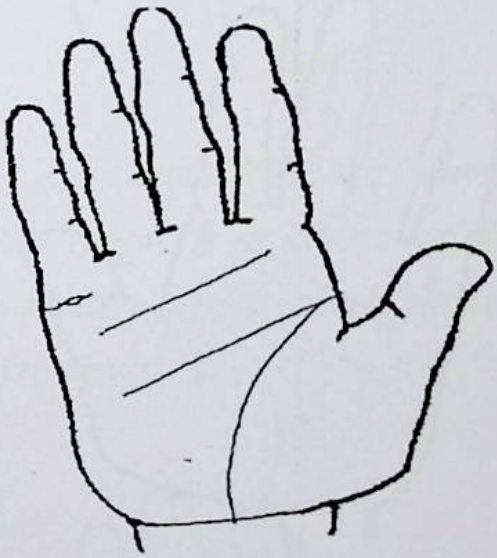

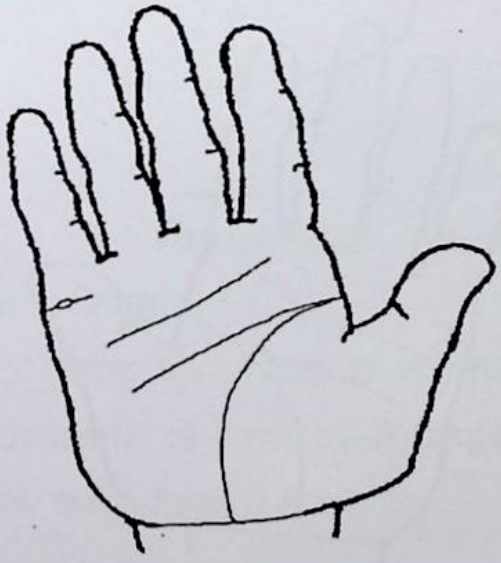

(स) मध्य में द्विप का चिन्ह

दाम्पत्य जीवन के मध्यांतर में कठिनाईयां व आर्थिक स्थिति कमजोर होती है जो स्थाई नहीं होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. विवाह रेखा एवं गुणन चिन्ह

यह अशुभ चिन्ह है विवाह रेखा पर गुणन चिन्ह संबंध विच्छेद या जीवन साथी की मृत्यु का संकेत है।

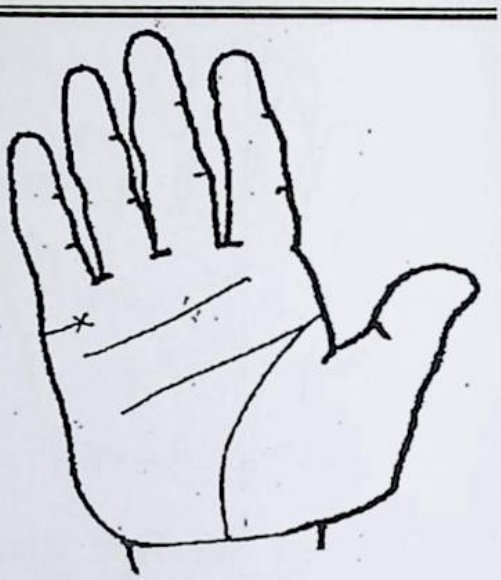

जीवन रेखा पर स्पर्श करता हुआ गुणन चिन्ह संतान उत्पत्ति मे बाधा तथा गर्भपात का सूचक है।

3. विवाह रेखा पर बिन्दु चिन्ह

यह अशुभ है जीवन साथी की बिमारी व मृत्यु का संकेत है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. नक्षत्र चिन्ह

1. विवाह रेखा सूर्य क्षेत्र पर पहुंचे और नक्षत्र चिन्ह हो तब जातक का विवाह अन्य कुल में होता है। जातक को धन सम्पदा व सम्मान जीवन साथी के सहयोग से प्राप्त होता है।

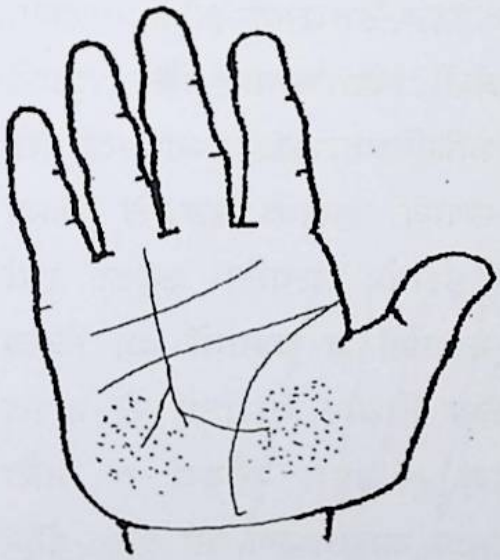

2. विवाह रेखा पर नक्षत्र चिन्ह अशुभ हैं व जीवन साथी से वियोग व अत्यधिक दुःख प्राप्त करता है।

3. विवाह रेखा पर वर्ग का चिन्ह

यह शुभ चिन्ह है व जातक के विवाह में आने वाली विपत्तियों से रक्षा करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुक्र मेखला

हथेली में करतल के एक ओर सबसे अधिक ऊंचाई पर

एक ओर सूर्य पर्वत और दूसरी ओर शनि पर्वत को पार करती हुई गोलाई में बड़ी हुई एक अर्ध वलय की आकृत्ति निर्मित करने वाली शुक्र मेखला सातवीं प्रमुख रेखा है। एक ओर मध्यमा व तर्जनी के मध्य और दूसरी ओर कनिष्ठिका व अनामिका के मध्य स्थान, इसके उत्पत्ति स्थल एवं समापन के मध्य स्थान, इसके उत्पत्ति स्थल एवं समापन स्थल है। इस रेखा के लक्षणों व प्रभावों का जिक्र कई विसंगतियां व अलग – अलग विचार धाराओं से ग्रस्त है। प्राचीन सिद्धांतों में इसे काम – भाव सौंदर्य व अति संवेदनशील से जोड़ा गया है। इसका नामकरण भी शुक्र क्षेत्र के लक्षणों व प्रभावों के कारण शुक्र पर्वत से अधिक दुरी पर स्थित होने के बावजूद भी शुक्र वलय इसी कारणों से पड़ा परन्तु वस्तु स्थिति मे इन गुणों की मौजुदगी वाकई इसके नामकरण वाली है पर आज के आधुनिक पर्यवेक्ष में यह पूर्ण नहीं होती है। अति संवेदनशीलता अधीरता व सौदंर्य बोध के मायने बदल चुके है। इसे केवल हृदय रेखा की सहायक रेखा तथा मन व भाव पक्षों की क्रियाशीलता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को प्रभावित करने वाली संवेदन रेखा मानना ही उचित है। अति संवेदनशीलता, भाव पक्ष को बड़ाकर कामुकता व काम भाव को असंतुलित कर बड़ाती है जिसके कारण कामुक भाव बड़कर जातक के चरित्र को नीचे गिराते है। यह धारणा प्राचीन सिद्धांतों को भी प्रबल करती है।

शुक्र मेखला सामान्यतया कोनिक व नुकिले हाथों में ही पाई जाती है। वैसे भी इस श्रेणी के हाथ अत्यंत संवेदनशील, भावुक अनुरागी प्रवृत्तियों का संवर्द्धन करते है प्रायः युवा अवस्था में इन भावनाओं व आवेगों की तीव्रता अत्यधिक होती है परन्तु प्रोढ़ अवस्था में इन भावनाओं व संवेदनों की दिशा बदल जाती है व ये प्रवृत्तियां जातक को साहित्यकार, संगीतज्ञ, कवि, चित्रकार, दार्शनिक बनाकर उसकी जीवन धारा ही बदल देती। अर्थात युवा अवस्था के हानिकारक प्रभाव प्रोढ़ अवस्था में गुणों में तबदील हो जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि हाथ में अन्य लक्षण व कारक शुभ हो और शुक्र मेखला उत्पन्न हो तो दुषित कामुकता एवं अनुराग का परिवर्तित रूप, इन क्षेत्रों में अन्वेषणात्मक बन जातक को अल्प स्तर का साहित्यकार, कला पारखी अथवा दार्शनिक बना सकता है। अर्थात इन अवगुणों को गुणात्मक रूप प्राप्त हो जाता है।

इसके विपरित अन्य लक्षण भी अशुभ हो तो अति संवेदनशीलता कामुक स्वभाव, अनुरागी प्रवृत्तियां जातक को

चरित्रहीन, विक्षिप्त या पागलपन की हद तक अनैतिक कार्य कराती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शुक्र मेखला के गुणों को हाथ के अन्य शुभ व अशुभ लक्षणों के पर्यक्ष में देखना जरूरी है अथवा जातक के फलित में उलटफेर हो सकता है।

मुख्य रेखाओं के विस्तृत प्रभावों को जानने के लिए पूर्व वर्गीकृत प्रणाली में अध्ययन उचित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(I) शुक्र मेखला का आरंभ स्थल

1. शुक्र मेखला अर्ध चंद्राकार आकार लेते हुए एक ओर तर्जनी व मध्यमा के मध्य से निकलकर, शनि पर्वत व सूर्य पर्वत को पार करती हुई कनिष्ठका व अनामिका के उद्‌गम स्थल के मध्य में समाप्त होती हैं। यह रेखा अति संवेदनशील, काम भाव, विपरित लिंग के प्रति आकर्षण, प्रेम व अनुरागी प्रवृत्तियों को उत्तेजित करती है। इसके प्रभाव से जातक बैचेन, कामभाव व विकारों से ग्रस्त रहता है। किशोर अवस्था में दुष्प्रभावी परन्तु प्रौढ़ अवस्था में संगीत, साहित्य व कला के क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धियां प्रदान करती है।

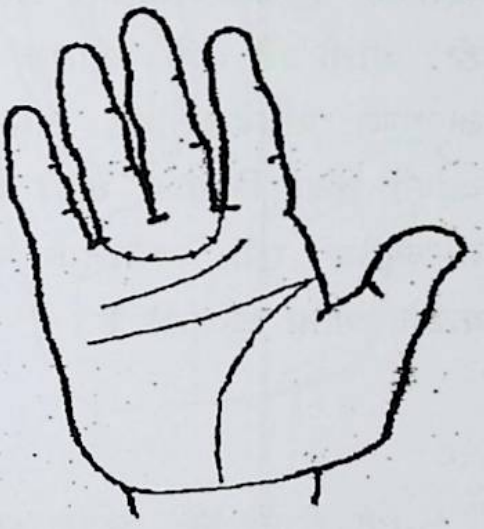

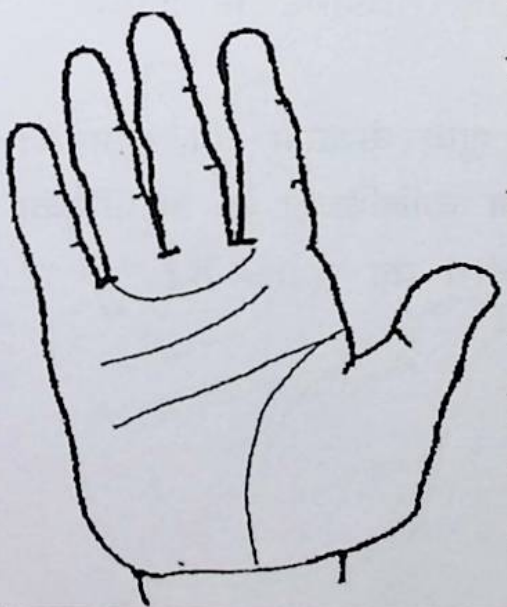

2. यदि शुक्र मेखला, गुरू पर्वत से आरंभ हो

यदि यह रेखा गुरू पर्वत क्षेत्र से प्रारंभ हो तो जातक निगूढ़ विद्याओं का ज्ञाता तथा धर्म में विश्वास करने वाला, रहस्यमयी छवि वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. एक से अधिक शुक्र मेखलाएं

जातक के हाथों में कई मेखला (शुक्र मेखला) उत्पन्न हो जाती है जो जातक को अत्यन्त संवेदनशील, आलसी, कामी तथा निराशा वादी बना, चरित्रहीन एवं अनैतिक कार्य करने वाला बनाती है।

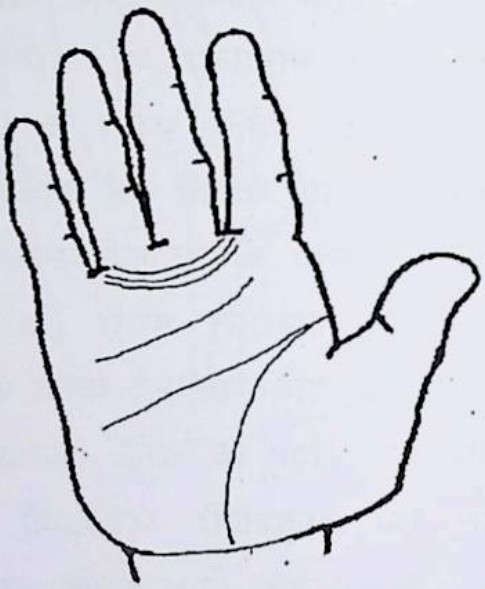

(II) शुक्र मेखला का समापन स्थल

शुक्र मेखला का समापन स्थल कनिष्ठिका व अनामिका के बीच का स्थान है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. शुक्र मेखला का समापन बुध क्षेत्र में हो

यदि शुक्र मेखला का समापन बुध पर्वत क्षेत्र पर हो तो जातक मे मनोविकार उत्पन्न होते है। उसका शरीर तंत्र अत्यंत संवेदनशील परन्तु शारीरिक कमजोरी से ग्रस्त रहता है। जातक सदैव बैचेन और व्यग्रता से ग्रस्त खोया–खोया रहता है। कोई भी कार्य स्थिर भाव से नहीं कर सकता अतः असफलताएं तुरन्त घेर लेती है।

(III) शुक्र मेखला एवं ग्रह प्रदेश

हथेली में उपस्थित ग्रह प्रदेश उन्नत, सपाट, समतल एवं धंसे हुये, अपने प्रभाव मुख्य रेखाओं पर ड़ालते है तथा गुण विशेष उस ग्रह के मूल गुण कहलाते है जो प्रत्येक ग्रह को दूसरे ग्रहों से अलग – अलग करते है। इन ग्रहों के उन्नत व सपाट होने से जातक के जीवन पर आमूल परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। जो निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. गुरू प्रदेश

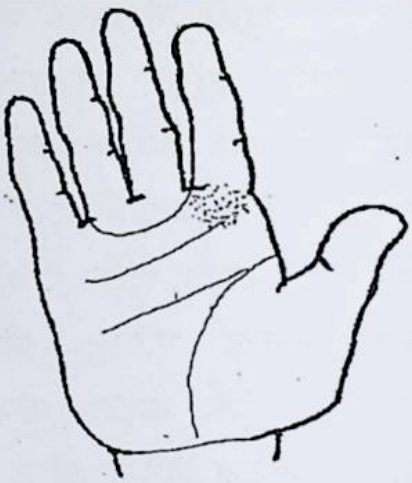

शुक्र मेखला के साथ गुरू प्रदेश यदि उन्नत है तो दूषित कारकों को विराम प्राप्त होता है तथा जातक प्रौढ़ अवस्था में उत्कर्ष कार्य करता है। वह साहित्य नेतृत्व व अच्छा शिक्षाविद् हो सकता है।

2. शनि प्रदेश

शुक्र मेखला के साथ शनि प्रदेश के उत्पन्न होने पर दूषित कारक अपना असर ज्यादा दिखाते हैं। जातक एकांकी हो नीच व अश्लील क्रियाओं में सलंग्न होता है। चरित्र पर लांछन लगता है व समाज में प्रतिष्ठा धुमिल होती है।

3. सूर्य प्रदेश

शुक्र मेखला के साथ सूर्य पर्वत क्षेत्र विकसित होने पर प्रतिष्ठा पर आंच आती है। जातक गर्वीला, घमंड़ी, पद का दुरूपयोग करने वाला तथा लालची हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. बुध प्रदेश

जातक के विकसित बुध पर्वत क्षेत्र व शुक्र मेखला जातक को लालची व लोभ में प्रर्वत करती है। जातक धोखेबाजी व सट्टे से काफी संपदा व धन प्राप्त करता है जो कि स्थाई नहीं रहती। जातक की वृद्धावस्था कठिन एवं परेशानियों में व्यतीत होती है।

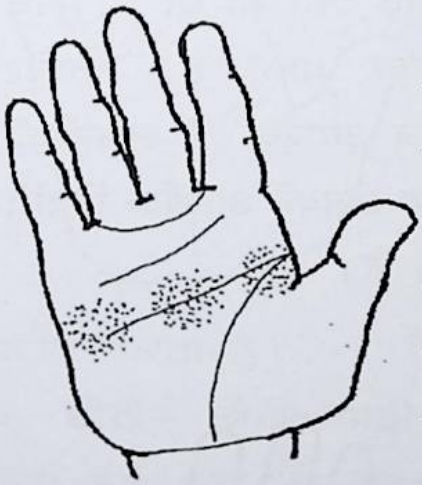

5. मंगल क्षेत्र

जातक के विकसित क्षेत्रों, उच्च मंगल, मंगल का मैदान एवं निम्न मंगल के साथ शुक्र मेखला के संयोग जातक को विख्यात, हठी तथा निड़र बनाती है। जातक सदैव प्रमुख या पीठाधीश का पद प्राप्त करता है।

6. चंद्र क्षेत्र

जातक में विकसित चंद्र क्षेत्र के साथ शुक्र मेखला का संयोग सौंदर्य प्रेमी तथा कला क्षेत्रों में महत्वपूर्ण, नवीन आयाम स्थापित कराती है। अन्य लक्षणों के कमजोर होने पर जातक निर्बल काया व मनोरोगी भी हो सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. शुक्र क्षेत्र

जातक के विकसित शुक्र क्षेत्र के साथ शुक्र मेखला जातक को कामी तथा नीच प्रवृत्ति में प्रर्वत बनाती है। प्रायः जातक प्रौढ़ अवस्था में ही मन पर नियत्रंण कर पाता है। किशोर अवस्था व यौवन अवस्था में मनमौजी स्वभाव के कारण उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहती है।

IV) शुक्र मेखला का स्वरूप व दोष

1. शुक्र मेखला का टूटा होना

यदि शुक्र मेखला छोटे–छोटे खंड़ में टूटी हुई हो तब जातक, शारीरिक रूप से कमजोर, चिड़चिड़ा, शीघ्र आवेश में आने वाला, कामुक प्रवृत्ति वाला तथा दिखावें में रूचि रखने वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. शुक्र मेखला के साथ दूषित ह्रदय रेखा

जातक कामी प्रवृत्तियों के कारण, भावनाओं पर नियंत्रण नही रख सकता तथा ह्रदय रोग का शिकार हो जाता है। प्रेम संबंधों में वह हानि उठाता है। शीघ्र आवेश उसे असफल बनाता है।

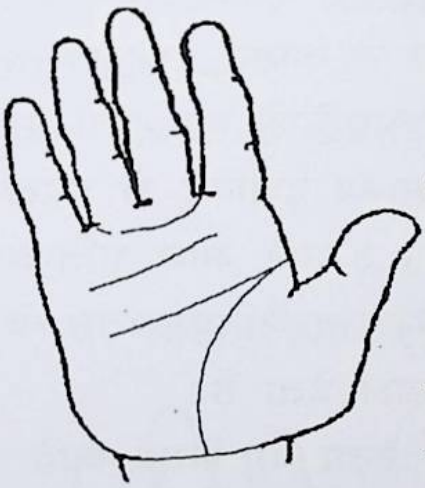

3. शुक्र मेखला सूर्य क्षेत्र में टूटी हुई हो

जातक की शुक्र मेखला सूर्य क्षेत्र में टूटी हुई हो तो जातक सौंदर्य वृत्ति का एंव कामूक स्वभाव का उपयोग कर कला क्षेत्र में नये आयाम प्रदान करता है।

4. छोटी– छोटी आड़ी रेखाओं से कटी हुई शुक्र में कटना

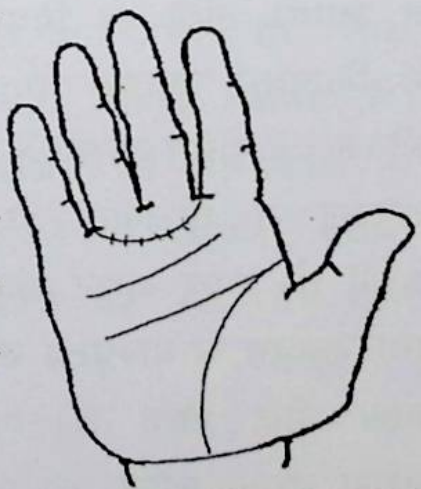

जातक लैंगिक आकर्षण में असफलताएं प्राप्त करता है। अन्य लक्षण शुभ होने पर असफलताओं में कमी आ सकती है। अन्यथा दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(V). शुक्र मेखला एवं अन्य बुध रेखाओं से संबंध

1. क्योंकि सूर्य रेखा व भाग्य रेखा सूर्य पर्वत व शनि पर्वत पर समाप्त होती है। यदि इस स्थल पर शुक्र मेखला इन दोनों महत्वपूर्ण रेखाओं को काटते हुए आगे बड़े तो जातक के लिये अशुभ है क्योकि इस रेखा के प्रभाव से जातक, कामूक व अनुरागी प्रवृत्तियों का होता है। उसका भाग्य दुर्भाग्य में बदल जाता है। उसकी मान प्रतिष्ठा को धूल में मिला देता है। वह चरित्र व नैतिक पतन के कारण अपने जीवन को दुर्भाग्य में ड़ाल देता हैं।

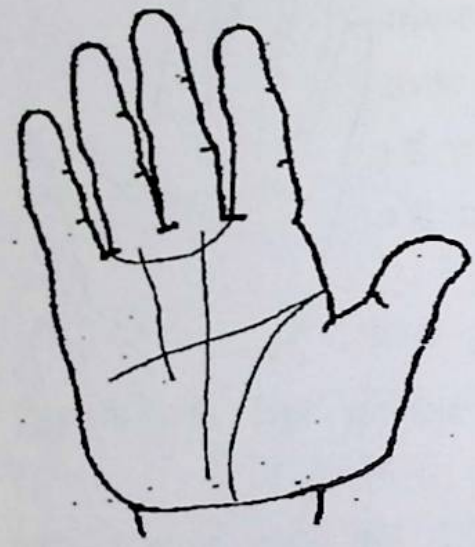

2. शुक्र मेखला बड़कर विवाह रेखा में मिल जावे

शुक्र मेखला सूर्य पर्वत पर न जाकर लंबी हो विवाह रेखा में मिलकर जातक के दाम्पत्य जीवन को दूषित करती है। जातक शंकालु व असंमत हो जीवन साथी के साथ मधुर संबंध नहीं रख सकता व दाम्पत्य जीवन में जहर घोल लेता है। यह एक अशुभ कारक योग बन जाता है।

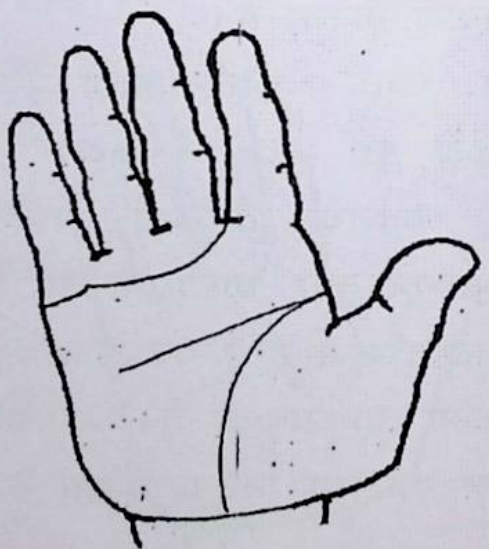

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. शुक्र मेखला विवाह रेखा को काटे

यह भी अशुभ कारक है क्योंकि जातक अत्यधिक कामूक प्रवृत्तियों व उग्र स्वभाव के कारण जीवन साथी से निर्वाह नहीं कर सकता है। क्रूर ह्रदय होने से विवाह संबंध विच्छेद हो जाते है।

4. विवाह रेखा शुक्र मेखला की ओर चिपकी हो

ह्रदय रेखा ऊपर की ओर चिपककर शुक्र मेखला के नजदीक झुकी हुई हो तब जातक असंयमित हो स्वार्थ वश प्रेम संबंध बनाता है। प्रेम संबंधों में भी स्वार्थ ही रखता है व अपना स्वार्थ पूर्ण होने पर उसे छोड़ देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(VI) शुक्र मेखला तथा प्रभावी रेखाएं

शुक्र मेखला अत्यंत छोटी वलयाकार रेखा है तथा इसका क्षेत्र भी व्यापक नहीं है अतः इस रेखा के साथ बहुत कम प्रभाव रेखाएं होती है। फिर भी शुक्र मेखलाएं एक से अनेक होती है वो भी प्रभावी रेखाये ही होती है जिसका प्रभाव शुक्र मेखलाओं के सदृश्य ही होता है। ऐसी रेखाएं एक से लेकर चार– पांच भी हो सकती है तथा जातक अत्यधिक संवेदनशील तथा कामुक विचारों में संलग्न रहने से निराशावादी होता है। परिश्रम अधिक न करने से रोगी ओर असफल होता है।

(VII) शुक्र मेखला तथा शुभ अशुभ चिन्ह

1. खंण्ड़ित शुक्र मेखला तथा मस्तिष्क रेखा के अन्त पर क्रास का चिन्ह

मस्तिष्क रेखा का अंत चंद्र क्षेत्र पर हो तथा अंत पर क्रास का चिन्ह हो तथा शुक्र मेखला टूटी हुई होने पर अत्यंत अशुभ है। जातक कामोन्माद में पागलपन तक पहुंच मानसिक संतुलन खत्म कर देता है। जातक मनोरोगी व असफल हो अपराधिक प्रवृत्ति हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. अनेक शुक्र मेखला व क्रास का चिन्ह

प्रभावी रेखाएं मिलकर अनेक मेखला निर्मित करें व क्रास का चिन्ह हो तब जातक कामी हो मनोरोगों का शिकार हो जाता है।

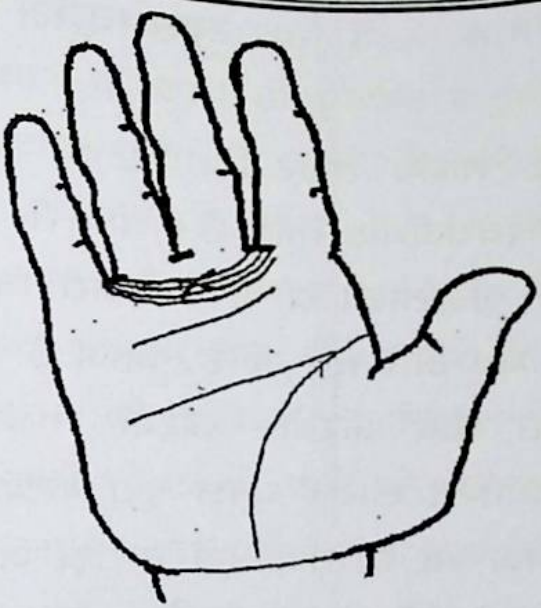

3. शुक्र मेखला पर गुण चिन्ह

शुक्र मेखला पर गुणन चिन्ह अशुभ है। जातक की प्रवृत्ति मनोविकारों वाली तथा आत्महत्या करने की होती है जो विष खाकर करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुखाकृति विचार

मानव शरीर विधाता की सर्वश्रेष्ठ, सबसे विलक्षण और आश्चर्यजनक कृति है। जीव तो बहुत है किन्तु केवल मुनष्य ही बुद्धिशाली प्राणी है। जरा विचार कीजिये लाखों वर्षो से मानव अस्तित्व में है, आज है और लाखों वर्षो तक रहेगा। इस बीच अरबों– खरबों मानवों का जन्म हुआ। अपना निर्धारित जीवन काल पूरा करके वे पंचतत्व में विलीन हुए। आज भी विश्वभर में करोड़ों मनुष्य है और भविष्य में भी यह सिलसिला जारी रहेगा। परन्तु आज तक कोई दो मनुष्य एक से न पैदा हुए है, न होंगे। दो लोग एक जैसे दिखाई दे सकते है, परन्तु गहराई से ध्यानपूर्वक देखने पर उनमें अंतर अवश्य दिखाई देंगे। किन्हीं दो व्यक्ति की भले ही वे जुड़वा क्यों न हो आवाज, चाल, रंग, बनावट, गंध, हाथ – पैरों की लकीरें, आदतें और भाग्य आदि एक से नहीं हो सकते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईश्वर की रचना में कुछ भी निष्प्रयोजन नहीं हैं – मानव शरीर भी नहीं। एक तो गर्भाधान के साथ ही प्रत्येक मनुष्य की अपनी पृथक पहचान बनना शुरू हो जाती है। शिशु जन्म लेता है तथा ग्रहों की क्या स्थिति होती है? उसके हाथ पैंरों की रेखाएं क्या कहती है? उसके भविष्य के विभिन्न भागों में चिन्ह उसके भविष्य का संकेत देते है। हस्त रेखा तथा सामुद्रिक विज्ञान की यही तो खासियत है कि शरीर की रचना, उसके चिन्हों, चेष्टाओं आदि के आधार पर उसके भविष्य के विषय में लगभग शत–प्रतिशत भविष्यवाणी की जा सकती है। जातक का शरीर उसकी किस्मत, कर्मफल, नफा– नुकसान, आयु के बारे में सब कुछ बतलाता है। ज्योतिष शास्त्र, हस्त रेखा विज्ञान, शरीर लक्षण शास्त्र, मुखाकृति विज्ञान, पद रेखा के जरिये हमें ऐसे सूत्र प्राप्त होते है जिनके आधार पर किसी जातक के बारे में काफी हद तक सही भविष्यवाणी की जा सकती है। हमारे प्राचीन ऋषियों जैसे– समुद्र, वराहमिहिर, गर्ग, चरक व कई जैन संतों ने वर्षो के सामुद्रिक, हितोपदेश, गीता, मत्स्यपुराण, सकन्द पुराण, पराशर संहिता, योग सूत्र, गरूड़ पुराण, अग्नि पुराण जैसे प्राचीन साहित्य में हमें भरपूर सामग्री एवं मार्ग दर्शन प्राप्त होता है। पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस दिशा में पर्याप्त शोध किया है परन्तु भारत में जितना कार्य हुआ है, उतना कही नहीं हुआ और भारतीय आचार्यो के मत अधिक तर्क संगत भी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल विषय पर आने से पहले एक बात जान लेना उचित होगा की भविष्य कथन करना कोई आसान काम नहीं है। कोई भी काम जिसे जातक करें उसे पुरी निष्ठा से करना चाहिये। कई सुप्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं की मान्यता है कि मात्र हाथों की लकीरों को देख कर भाग्यफल बतलाने में गलतियां हो सकती है। अतः शरीर के प्रत्येक अवयव का बारीकि से अवलोकन करना चाहिये। फिर भाग्यफल बताना अधिक तर्क संगत होगा। इसके लिये अध्ययन, सूक्ष्म दृष्टि के अलावा अनुभव भी महत्वपूर्ण होता है। जो लोग इन विद्याओं में पारगंत होना चाहते है वे गंभीरता पूर्वक लोगों के चेहरों, उनकी चेष्टाओं, अंगों की संरचनाओं आदि का अध्ययन सुक्ष्मता से करें। जिससे धीरे-धीरे दिलचस्पी तथा विषय पर पकड़ मजबूत होती जाएगी। जब ये शास्त्र रचे गए थे, तब लोगों का जीवन सफल था, उसमें बनावट नहीं

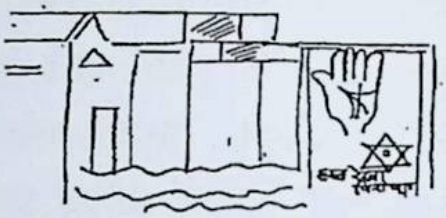

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थी। लेकिन आजकल लोग पैंट–शर्ट, जूता–मोजा, इत्यादि पहनते है। सौंदर्य प्रसाधनों का इतना उपयोग करते है कि असली चेहरा छिप जाता है। प्लास्टिक सर्जरी कराना आम बात हो गई है। पैरों के रोंए मोम से निकलवाना, भौंहे तराशना इन सबके कारण व्यक्ति के अंगों के लक्षणों को समझने में कठिनाई होती है और इसलिये भविष्य कथन गलत भी हो सकता है। अतः थोड़ी सतर्कता बरतना लाभदायक होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैर

यूं तो शरीर के प्रत्येक अंग का अपना अलग महत्व होता है लेकिन जिस प्रकार किसी इमारत के लिये उसकी नींव की सुदृढ़ता होती है, उसी प्रकार मानव शरीर को इधर से उधर ले जाने के लिये, उसका भार वहन करने हेतु व अन्य कई कार्यो के लिये पैरों की महत्ता स्वयं सिद्ध है। पैरों के अभाव में शरीर कुछ भी कर पाने में असमर्थ हो जाएगा। आजकल भारत सरकार पोलियों उन्मूलन के लिये इसी कारण से कृत संकल्पित है ताकि इस भीषण रोग से हजारों बच्चे विकृत पैरों के चलते विकलांग न हो जाएं। जीवन का दर्शन भी है चलते जाना और चलने के लिये मजबूत पैरों का होना आवश्यक है। पैरों को अध्ययनार्थ हम चार भागों में बांट सकते है।

अ. जाँघे ब. घुटने स. पिंडलियाँ

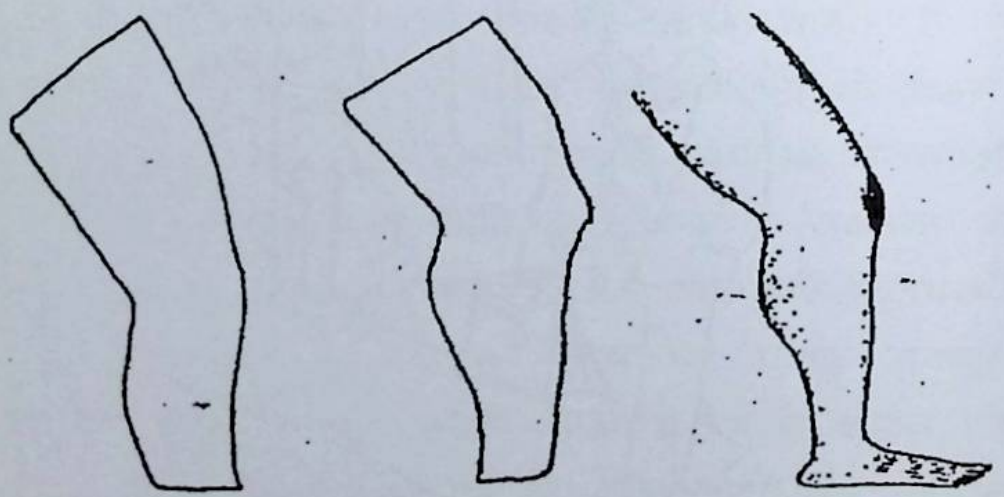

द. पैर –जिसमें एड़ी, पंजे, तलवे तथा उंगलियां होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समूचे पैर का आकार क्या होना चाहिये, पैरों की कुल लंबाई, या आकार में मान से ही उसके चार भागों का आकार निर्धारित किया जा सकता है। तो इसका सीधा–सरल उत्तर यह है कि पैरों का आकार शरीर के अनुरूप होना चाहिये। पैर मांसल हो, सूखे, नसदार न हो, परन्तु इतने मांसल भी न हो कि हाथी पावं जैसे लगे। उनमें कुछ चमक हो, पपड़ीदार, रूखे,

बदरंग न हों, पैर कुल मिलाकर आकर्षक या खूबसूरत हो। उनमें थोड़ी गर्माहट होनी चाहिये। पैरों में पसीना आना शुभ नहीं है। किसी– किसी को हर मौसम में पसीना आता है। पावं न बहुत ऊँचे हो और न एकदम छोटे। पैरों का उपरी हिस्सा कुछ उठाव लिये हुये हो सपाट न हो।

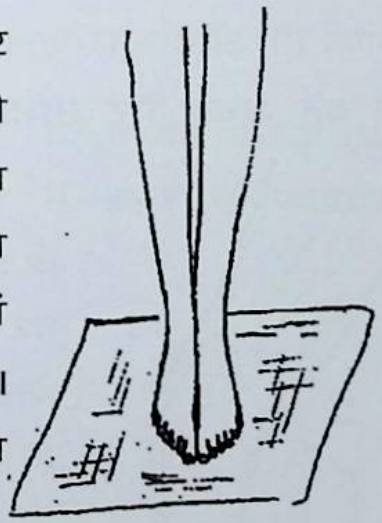

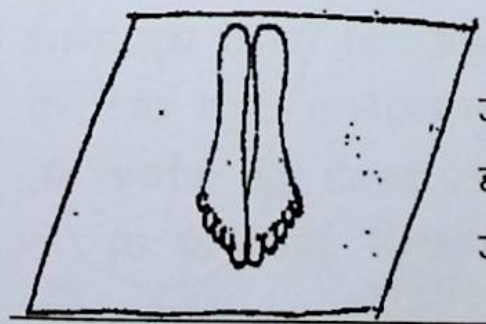

तलवा भी सपाट न हो पैर के ऊपर मोटी नसों का होना अशुभ होता है। एड़ी, पंजों की चौड़ाई, उंगलियाँ इत्यादि देखने में सुंदर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा अनुपातिक हों। पावं स्वच्छ हों यानी उंगलिया, अंगूठा, नाखूनों में मैल न हो। पैरों के रंग या वर्ण के विषय में भी आचार्यो ने कहा है कि तलुए यदि रक्तिम अर्थात लालिमा लिये हुए हों तो वे श्रेष्ठ होते है।

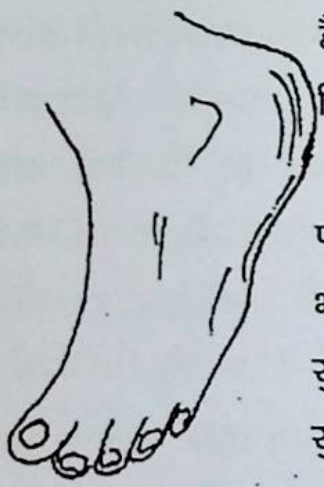

व्यक्ति का वर्ण तो आबों हवा, वंश परम्परा आदि पर निर्भर करता है। फिर भी साफ सुथरे, चिकने, सुड़ौल पैर हो, उनकी रेखाएं स्पष्ट हो और कुछ गुलाबीपन हो तो वह अच्छा पैर माना जाएगा।

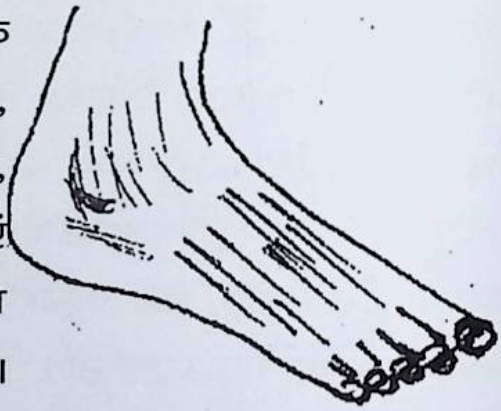

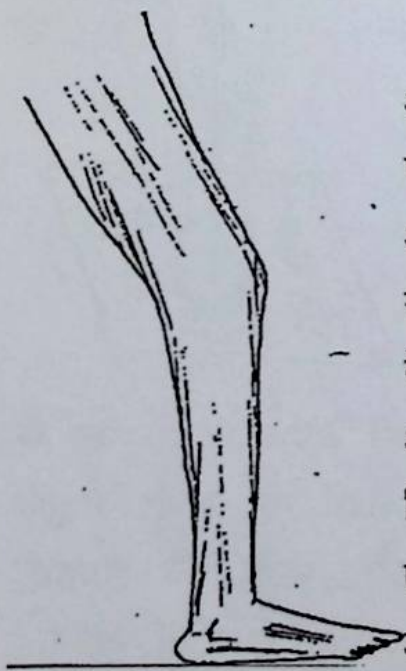

ऊपर जो बताया गया है वे आदर्श पावं के गुण है। इसी प्रकार पांवों में दोष भी होते है। वे आगे अधिक और पीछे बहुत पतले हों, खुरदरें हों, नाखून पीले या मैले हो, वे टेढ़े–मेढ़े, बहुत लंबें हो, बाहर की ओर बहुत मुड़े हो, नसों का उभार दिखता हो, उंगलिया बहुत छोटी या एक दूसरें से उनकी दूरी अधिक हो, उनका रंग बहुत काला हो तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक को अनेक दुष्वारियों का सामना करना पड़ता है जिस पर आगे प्रकाश ड़ाला जाएगा।

पैरों का अध्ययन करने के लिये जातक उन्हें भली–भांति धोकर आए। पहले पांवों का मुआईना करके उसकी विशिष्टताओं को देखना चाहिये। फिर सूक्ष्म अध्ययन हेतु पैरों की छाप लेना चाहिये। इसके लिये या तो जातक को साधारण गीली मिट्टी पर खड़ा रहने को कहा जाए, और उसके सूखने के पश्चात् फूट इम्प्रेशन पर विचार करें या फिर सफेद कागज पर कार्बन पेपर रखें और पैरों की छाप लें और रेखाओं, उभारों, गड्ढ़ों, चिन्हों का विवेचन करें।

पद चिन्हों के गूढ़ार्थ

पैरों के तलवों में रेखाएं विविध प्रकार की आकृतियां बनाती है जिनके अर्थ या संकेतों को समझना भविष्यवक्ता के लिये जरूरी है। ये आकृतियां शुभ या अशुभ प्रभाव ड़ालने वाली हो सकती है जैसेः– शंख, रथ, हय,त्रिशूल, स्वास्तिक, सिहांसन, छत्र, चंवर, वज्र, गज, चक्र, त्रिभुज, सर्प, मछली इत्यादि। शास्त्रों में इन

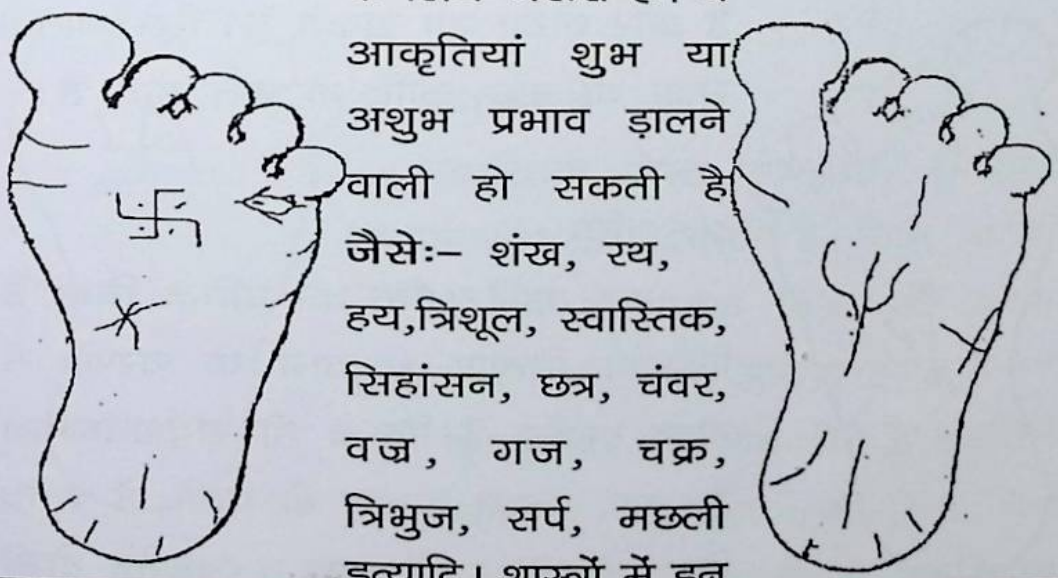

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिन्हों के विषय मे जो कहा गया उसका संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है।

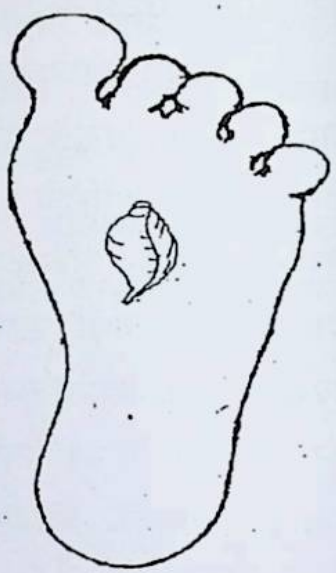

1. शंख

शंख एक धर्म चिन्ह है। स्वयं भगवान उसे धारण करते है। युद्ध में शंख का होना अनिवार्य होता है। अतः कहने की आवश्यकता नहीं कि पदतल में शंख की आकृत्ति का होना अत्यंत मंगलकारी है। यह जल तत्व का भी प्रतितिधि है। ऐसे जातक परोपकारी, विनम्र, भावना प्रधान, उदार स्वभाव के, मिलनसार और दूसरों के दुःख से दुःखी होते है। ये सब सज्जनों के गुण तो है किन्तु भावावेश में ज्यादा द्रवित होने पर ये कभी कुपात्रों का भी भला करने को तत्पर हो जाते है और धोखा खा सकते है। ऐसे जातक राजा या उच्च कोटि के संत होते है।

2. शक्ति

यह आदि शक्ति का प्रतिक चिन्ह है जिसका निवास भगवान के चरणों में होना दर्शाता है कि वे ही सर्वशक्तिमान है। यदि किसी ब्राह्मण के पावों में शक्ति चिन्ह हो तो उसके श्राप व आशीष दोनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्फल नहीं होते। क्षत्रिय के पदतल पर शक्ति चिन्ह हो तो वह शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होता है। वैश्य तेजस्वी, सफल कारोबारी होगा और शुद्र भी राजसी प्रवृत्ति वाला होगा।

3. कमल

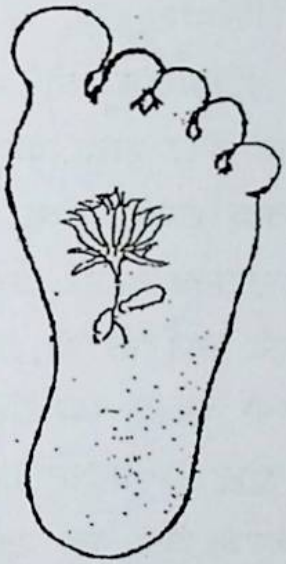

ईश्वर के प्रत्येक अंग की उपमा कमल, सरोज या पद्म से दी गई है जैसे– कमल नेत्र, चरण कमल, मुख कमल आदि। कमल में लक्ष्मी का निवास माना गया है। श्रीमद् भागवत गीता के अनुसार दुष्यंत के पुत्र भरत के हाथ में चक्र तथा पदतल में कमल दल के चिन्ह थे और वह चक्रवर्ती नरेश हुआ। ऐसे जातक कोमल हृदय वाले, महा पराक्रमी तथा स्नेही होते है।

4. स्वास्तिक

स्वास्तिक चिन्ह सौम्यता, सौभाग्य एवं पावनता का प्रतिनिधि है। जिन जातकों के पैरों में स्वास्तिक चिन्ह हो उनका झुकाव धर्म की ओर अधिक होता है। ये लोग युगपुरूष प्रमाणित होते है इसलिये प्रायः योगियों के तलवों में यह चिन्ह देखा गया है। किसी महिला के चरणों में स्वास्तिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो वह सुखी, समृद्ध, ऐश्वर्यवान और भाग्यशाली होती है। प्रायः उसका विवाह किसी उच्च पदाधिकारी से होता है।

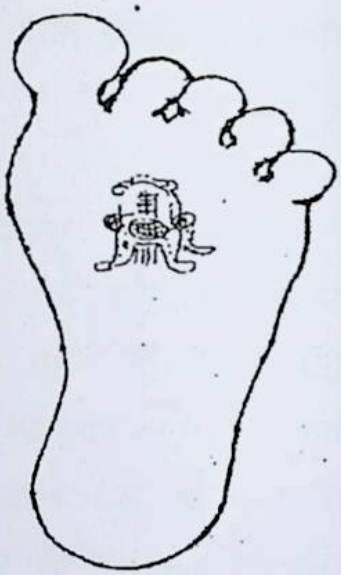

5. सिंहासन

सिंहासन तो राजसी शानों–शौकत, वैभव और सत्ता का प्रतीक है। अतः ऐसे जातक राजा, मंत्री, या उच्चाधिकारी होते है। इसका असर समस्त जातकों पर चाहें किसी वर्ण के हो, एक जैसा पड़ता है।

6. रथ

रथ चिन्ह से युक्त पावों वाला जातक योगी, इंद्रियदमन करने वाला, धर्मपुरायण होता है। ब्राह्मण को प्रतिष्ठा दिलाता है, क्षत्रिय यशस्वी होता है। इस चिन्ह के धारक वाहन सुख से वंचित नहीं होते। सेना के उच्च पदाधिकारियों में यह चिन्ह प्रायः पाया जाता है। इसे विजय का प्रतिक भी माना जाता है।

7. अश्व

विष्णु अवश्मेघ यज्ञ के अधिष्ठाता है। उनका एक अवतार हयग्रीव भी माना जाता है। समुद्र मंथन में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उच्चैश्रवा नामक एक अश्व भी देवताओं को प्राप्त हुआ था। इसलिए अश्व चिन्ह का भी पांव रेखा शास्त्र में महत्व है। जिनके पैरों की रेखाएं घोड़े की आकृति बनाती है वे शूरवीर, ऐश्वर्यशाली एवं शत्रु संहारक होते है अर्थात् हर विपत्ति पर विजय प्राप्त करते है।

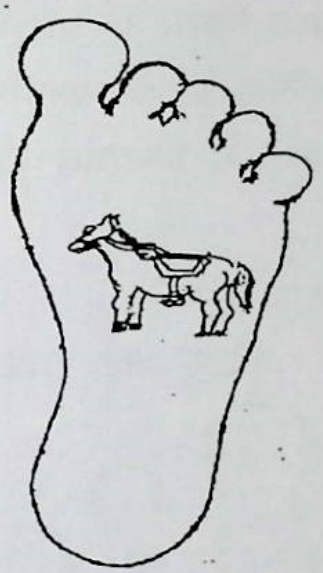

८. गज

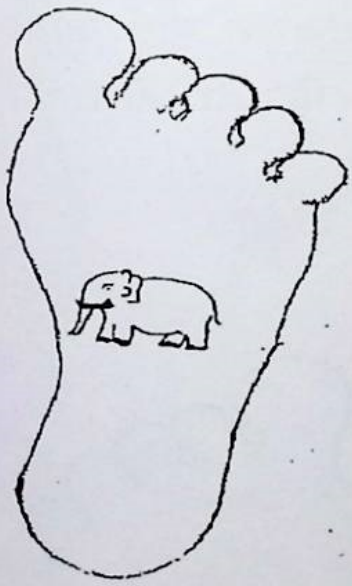

संकट में फंसे हाथी का उद्धार करने हेतु ईश्वर ने एक अवतार लिया था। पैरों में एक रेखा हाथी की सूंड का आकार जब बनाती है तो उसे हास्ति रेखा कहा जाता है। इसका धारक आस्तिक विचारों वाला, धनी, वैभव युक्त तथा प्रसन्नचित्त होता है। इन्हें वाहन सुख भी मिलता है। ऐसे जातक चूंकि भावुक भी होते है। इसलिये इनके विचार परिवर्तनशील भी होते है।

९. वेणु

कुछ जातको कें पावों की रेखाएं वेणु या मुरली या बंसी का आकार निर्मित करती है। श्री कृष्ण की मुरली के बिना कल्पना ही नहीं की जा सकती है। ऐसे जातक किसी को भी अपने वश में कर लेते है। ये भक्ति मार्गी होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा किसी के भी प्रति दुर्भावना नहीं रखते, बल्कि उनमें समर्पण की भावना होती है। प्रायः वे विख्यात संगीतज्ञ भी होते है।

10. मीन

विष्णु का पहला अवतार मत्सयावतार था। जिन भाग्यशालियों के मन में भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा होती है, उनके पैरों में मछली की आकृति अकसर पाई जाती है। कामदेव के ध्वज पर भी मीन का चिन्ह माना जाता है।

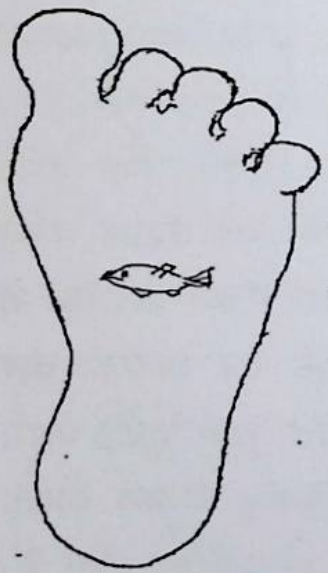

11. बरछी

भागवान व अवतारों के शास्त्रों में प्रायः तलवार, धनुष, गदा, चक्रादि होते है परन्तु बरछी से अभिप्राय् यह है कि वे पाप से ड़रते है और उसे दूर रखने हेतु बरछी का चिन्ह धारण करते है। ऐसे जातक आस्थावान, निर्दोष और भोले होते है। परोपकार करने में वे जीवन को धन्य मानते है।

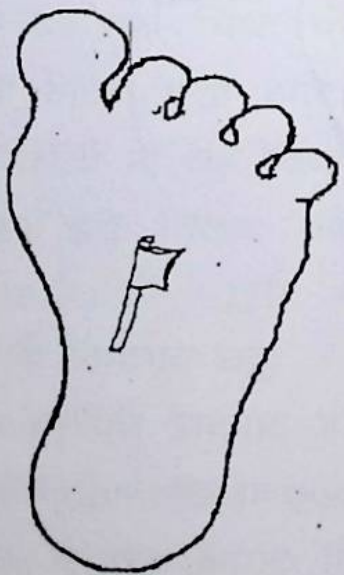

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. वज्र

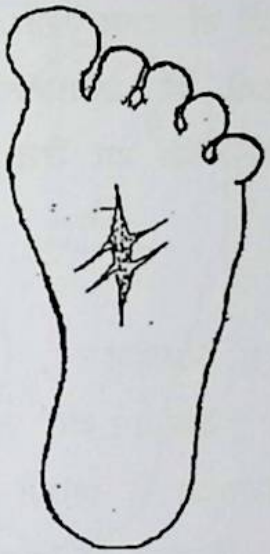

इंद्र के अमोघ शास्त्र को वज्र कहा जाता है। इसका प्रहार कभी व्यर्थ नहीं जाता। अतः वे जातक जिनके पैरों में वज्र चिन्ह हो वे शत्रुओं का मान मर्दन करने में समर्थ होते है।

13. धनुष

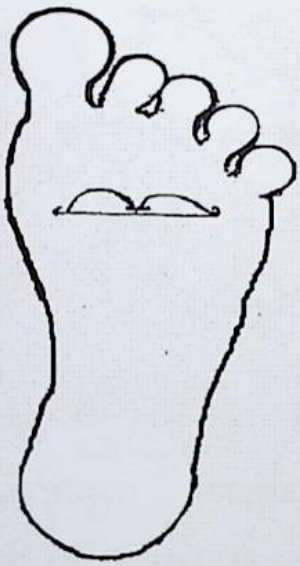

यह हथियार लक्ष्यभेध में कुशलता दर्शाता है। स्वयं श्री हरि के अतिरिक्त अर्जुन, एकलव्य, कर्ण आदि महान धनुर्धर थे। श्री राम ने शिव धनुष भंग किया था। भीष्म, द्रोण, अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि सब धनुर्विद्या मे निपुण थे। ऐसे जातक कुशाग्र बुद्धि और साहसी अवश्य होते है किन्तु वे कुटिल नीति पर चलने के विशेषज्ञ भी हो तो आश्चर्य नहीं। ऐसे लोग धनु लग्न में जन्में हो सकते है।

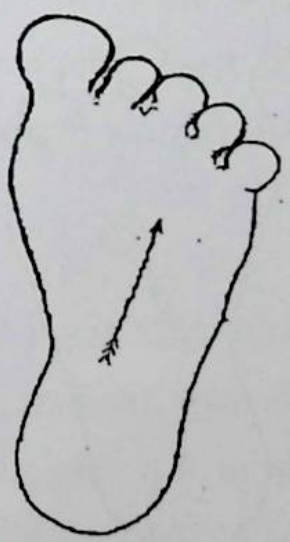

14. बाण

यह भी लक्ष्य भेदन का प्रतीक है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैरों में वाण रेखा हो तो जातक सफल कूटनीतिज्ञ होगा। वह तेजी से सफलता की सीढ़ियां चढ़ता है। उनका महान दार्शनिक या वैचारक होना भी संभव है।

15. खड्ग

खड्ग या तलवार चिन्ह भी श्री जनार्दन ने अपने चरणों में धारण किया है, जिससे वे भक्तों के पापों को काटते है। इस चिन्ह के धारक ईश्वर भक्त व परोपकारी होते है।

16. गदा

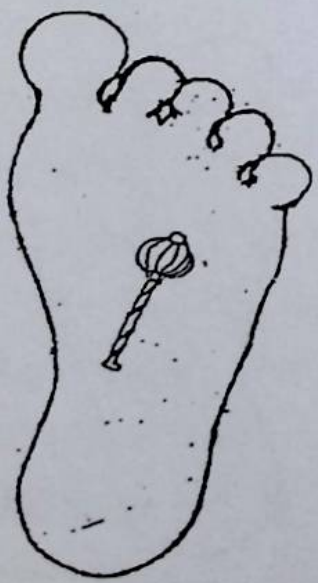

बलराम, भीम, दुर्योधन, हनुमान, अंगद, दुःशासन जैसे गदाधारियों से कौन परिचित नहीं हैं स्वयं भगवान विष्णु भी गदा एक हाथ में रखते है और इस चिन्ह से उनके पदतल सुशोभित है। समस्त पापों, कुकृत्यों, बुराईयों के नाश का प्रतीक है गदा। यह पितरों को भी मुक्ति दिलाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

17. छत्र

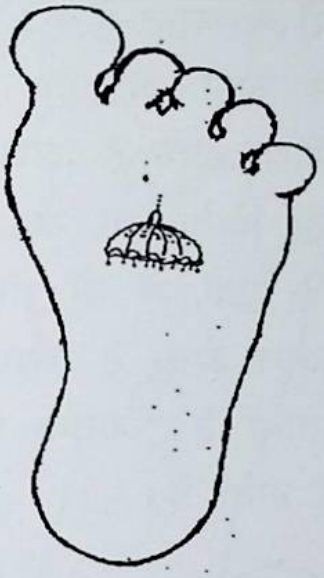

छत्र, छाता या छतरी व्यक्ति को धूप और वर्षा से बचाती है। इतना ही नहीं, वह दुःख, ड़र, विपत्तियों से भी सुरक्षा प्रदान करती है। तभी तो श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत की छतरी बना कर इंद्र के प्रकोप से बज्र वासियों की रक्षा की थी।

18. गृह

भगवान श्री कृष्ण ने गृह चिन्ह को इस उद्देश्य से अपने चरणों में स्थान दिया कि उनके भक्तगण उसमें प्रवेश पा सकें। सभी भक्तों, श्रद्धालओं के लिये इस घर के कपाट खुले है। इतना तो तय है कि जिन जातकों के तलुओं में गृह जैसी आकृति होती है वे किसी ग्राम के मुखिया हो सकते है और बड़ी संपत्ति के स्वामी भी होते है।

19. सर्प

सर्प घमंड़ और अहंकार का प्रतीक है। उसे द्विजिन्ही–दो जीभों वाला कहा जाता है। श्री कृष्ण ने कालिया नाग के फणों को कुचल कर गोप–गोपियों को बचाया और उसे मुक्ति दी थी। इतना ही नहीं नाग चिन्ह को उन्होंने अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैरों में स्थान दिया। यदि पदतल में सांप की खड़ी आकृति हो तो वह व्यक्ति भेदिया होता है जिसका विश्वास कदापि नहीं किया जा सकता। यदि सर्पाकृति बैठी मुद्रा में हो तो जातक कुटिल व कृतघ्न होता है तथा दरिद्रता में जीवन बिताता है। जातक कामी और गुस्सैल भी होता है।

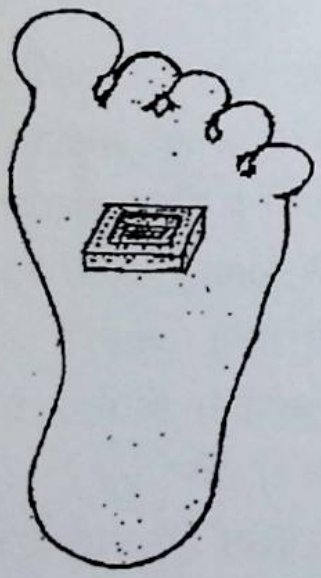

20. अग्नि कुंड़

भगवान स्वयं अग्नि स्वरूप है। इस आग में तपकर भक्तगण आह्वान करते है कि मेरी शरण में आ जाओं। ऐसे जातक परम भक्त, गुणी और सज्जन होते है।

21. शच

यह एक अर्ध चंद्र संदेश रेखा होती है, जो पैर तथा हाथ के अंगूठों के नीचे हो तो शुभ होती है। यह अन्न का प्रतीक है और अन्न में जो को श्रेष्ठ माना गया है। अतः ऐसे जातक को कभी भूखा नहीं सोना पड़ेगा। इसीलिये भोजन की चिंता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्याग कर वह प्रभु के भजन–पूजन में मन लगाता है।

22. कुंभ

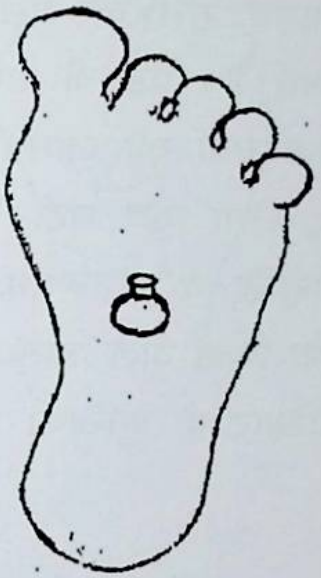

कुंभ अर्थात घड़ा। माता जान्हवी के हाथों में जल कुंभ होता है और श्री हरि के चरणों में भी अमृत का पात्र (कुंभ) है। यह आकृति बड़ी मंगलकारी मानी गई है। जिन खुश किस्मती लोगों के पैरों में कुंभ हो वे धन–वैभव, ऐश्वर्य का जीवन जीते है। पैतृक संपत्ति प्राप्त करते है। स्वभाव से वे गंभीर, सुदृढ़ और निरोगी होते है।

23. पर्वत

राधाजी का बिछोह भगवान कृष्ण को पहाड़ जैसा भारी लगता था। इसीलिये उन्होनें पर्वत चिन्ह पदतल में धारण किया है। अतः पर्वत चिन्ह का महत्व स्वयं सिद्ध है।

24. वृक्ष

इसके पिछे वासुदेव कुटुम्बकम् का भाव है अर्थात अखिल विश्व एक वृक्ष है जिसके बीज स्वयं परमपिता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस वृक्ष की शीतल छाव में मानव मन के सारे संताप दूर हो जाते है। पेड़ के उपकारों की कहां तक चर्चा की जाए। वह केवल देता है, लेता कुछ नहीं। अतः यह चिन्ह समृद्धि व संपन्नता का प्रतीक है। वृक्ष चिन्ह वाले जातक अकसर संयुक्त परिवार के मुखिया होते है।

25. चंद्र

कभी–कभी रेखा एक चंद्रमा जैसा वृत्त बनाती है जिसे चंद्र चिन्ह कहा जाता है। यह भी मंगलकारी है क्योंकि चंद्र भगवान शिव की जटाओं में और श्री हरि के चरणों में विराजमान है। 'चंद्रमा मनसोजात' अर्थात् वह मन का देवता भी है। पूर्ण चंद्र अपनी रश्मियों से अमृत की वर्षा करता है। ऐसे जातक भाग्य के धनी होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

26. अर्ध चंद्र

यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि राहु पूर्ण चंद्र को ग्रसता है। भगवान श्री कृष्ण ने भी अर्ध चंद्र को धारण किया है। आधा चंद्र निष्कलंक होता है, उसकी वृद्धि तो होनी ही है। अस्तु अर्धचंद्र चिन्ह हो तो भी उसका फल जातक को पूरा ही मिलेगा।

27. कुमुद

वैभव व श्री का प्रतीक कुमुद का फूल रात्रि में खिलता तथा सूर्य की प्रखर रोशनी में बंद हो जाता है। प्रेमी–प्रेमिकाएं भी रात्रि में ही मिलते है। अतः कुमुद चिन्ह से भी श्री हरि के चरण वेष्ठित है। ऐसे जातक रसिक मिजाज होते है और इनके जीवन में प्रेम प्रसंग अवश्य उपस्थित होते है।

28. अष्टकोण

आठ कोणीय आकृति आठों दिशाओं की द्योतक है तथा आठों सिद्धियों को भी प्रतिपादित करती है। जिस जातक के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैर में अष्टकोण चिन्ह हो वह आठों दिशाओं पर राज्य करता

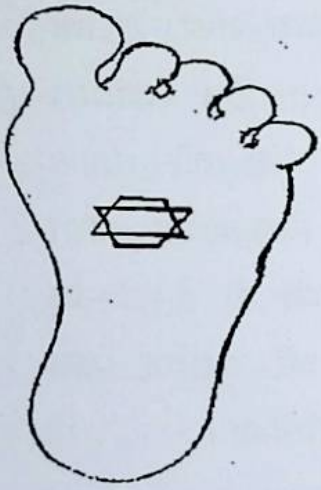

है या उसकी कीर्ति सर्वत्र व्याप्त हो जाती है।

29. नवकोण

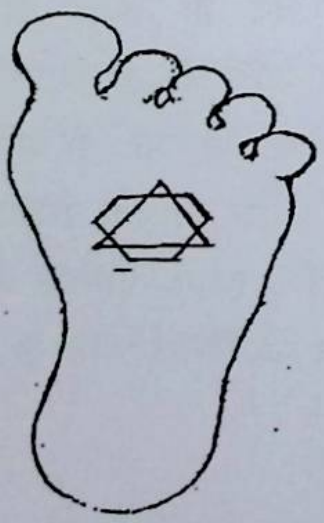

इस पूर्णांक की सर्वाधिक महिमा है यह नौ दुर्गा, नौरस, नौ खंड़, नवग्रह, नवधा भक्ति, नौ रत्न का प्रतिनिधित्व करने वाला चिन्ह है। नौ से बड़ा कोई अंक भी नहीं होता। इसीलिये नौ कोण की स्थिति के कारण नौ ग्रह जातक का कोई अनिष्ट नही कर सकते है।

30. त्रिभुज

भगवान कृष्ण तीनों लोकों के स्वामी है। वे भक्तों में भेद

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं करते– सबके तारणहार है। त्रिभुज या त्रिकोण राजसी, तामसी और सात्विक तीनों प्रवृत्तियों को भी प्रतिम्बिबित करता है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिमुर्ति का भी यह चिन्ह प्रतीक है। भगवान की प्राप्ति के भी तीन ही उपाय है– भक्ति, ज्ञान तथा वैराग्य। ऐसे अनेक कारण है जो इस चिन्ह को शुभत्व प्रदान करते है।

31. तिल

तिल शरीर के किसी भी भाग में हो सकते है और होते ही है। उन पर आगे सविस्तार विचार किया जाएगा, किन्तु तिल के बिना श्राद्ध, तर्पण नहीं होता तथा पितरों की सद्गति नहीं हो पाती। इस कारण से पैर में तिल का निशान होने पर जातक सौभाग्यशाली, पवित्रात्मा तथा धर्म घुरंघर होता है।

उपरोक्त विवेचना से विद्यार्थी ये न समझें की चिन्ह हूबहु रथ, वृक्ष, वेणु इत्यादि के समान होते है। रेखाओं की बनावट से इन चिन्हों का आभास होना ही पर्याप्त है। अब संक्षेप में कुछ मंगलकारी रेखाओं पर भी विचार करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्ध्व रेखा

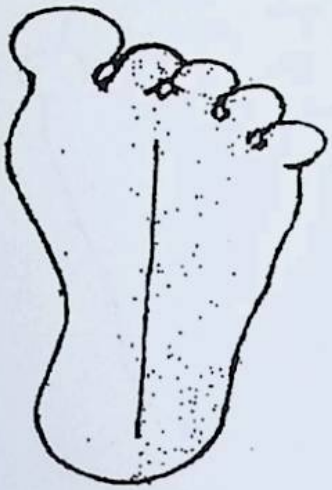

इसे भाग्य रेखा भी कहा जाता है और यह एड़ी के मध्य से, उसके पिछले सिरे से अंगूठे से तीसरी अंगुली (अनामिका) तक जाती है। यदि यह रेखा पूरी अखंड़ित हो तो जातक अत्यंत विद्वान, आदरणीय और प्रभुता सम्पन्न होता है। कुछ विशेषज्ञों ने इसका उद्‌गम मध्यमा की जड़ से माना है। उर्ध्व रेखा का उद्‌गम कही से भी हो, यदि वह स्पष्ट तथा लंबी हो तो शुभ फल देकर रहेगी। अगर पदतल में आजू-बाजू से दो और लघु रेखाएं भाग्य रेखा से जा मिलें तो भी मंगलदायक सिद्ध होती है। कभी-कभी जन्म के समय यह रेखा नहीं होती है किन्तु उम्र के किसी मुकाम पर बनना शुरू होती है, तो उस जातक का भाग्योदय भी वहीं से आरंभ होता है। जिस वर्ण के जातक के पैर में यह रेखा होगी उसमें, उसके जातिगत सद्‌गुण उभर कर आएंगे। यही बात स्त्री जातकों पर भी लागू होती है और यदि इस रेखा के समानांतर एक और रेखा चलती हो तो अनेक मुसिबतों के बावजूद उसका सौभाग्य अखंड़ित रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1. सौभाग्य रेखा

पदतल के बीचों–बीच यदि कोई अन्य रेखा हो तो वह सौभाग्य रेखा कहलाती है। यह भी शुभ फल देने वाली

होती है इसके रहते पुरूष जातक उच्चाधिकारी हो सकता है और स्त्री जातक या तो स्वयं महारानी अथवा उच्चाधिकारी की पत्नी होगी।

2. समृद्धि रेखा

समृद्धि रेखा वह छोटी सी रेखा है जो बाएं पैर के अंगूठे के नीचे उदित होती है। यह जितनी लंबी होगी उतना ही अधिक शुभ परिणाम देगी। ऐसा जातक दूसरों के मुकाबले शीघ्र सफलता अर्जित करता है और समृद्ध बनता चला जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. दानी रेखा

किसी भी पांव के तलुवे में मध्यमा से निकल कर नीचे जाती रेखा दानी या मद रेखा कहलाती है। ऐसे लोग उदार

ह्रदयी होते है व दान पुण्य करते है। यह रेखा पैर के चौथाई भाग में ही होती है।

4. कर्मठ रेखा

अंगूठे से एक अंगुल दूर से तिरछी रेखा निकल कर शीघ्र रूक जाए तो वह कर्मठं या आत्रोटन रेखा के नाम से जानी जाती है। ऐसे जातक सत्त क्रियाशील होते और कुशल कार्यकर्त्ता होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. सुखी परिवार रेखा

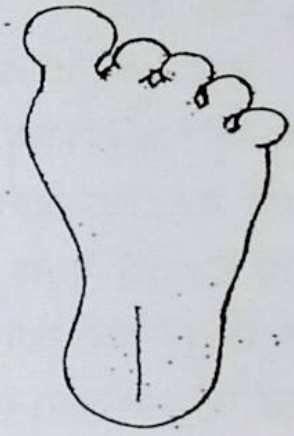

यह छोटी सी रेखा में कहीं पर भी स्वतंत्र अस्तित्व वाली होती है। पुरूष और स्त्री दोनों ही जातकों को इस रेखा के होने पर पूर्ण वैवाहिक सुख प्राप्त होता है जिसके कारण परिवार भी सुखी–सम्पन्न रहता है।

6. सत्ता रेखा

यह रेखा अंगूठे से लेकर कनिष्ठका उंगली तक पोरों पर चलती हुई आती है। गहरी और स्पष्ट होने पर यह जातक को समाज या देश में बुलंदियों तक पहुंचाती है।

7. मैथुन रेखा

एड़ी से ऊपर लगभग समानान्तर जाती हुई तीन लघु रेखाएं मैथुन रेखा कहलाती है। ऐसे जातक मैथुन क्रिया में निपुण होते है वे धर्मभीरू भी होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

8. धन रेखा

यह रेखा दो प्रकार की होती है। एक तो कनिष्ठिका की ओर टूट कर जाती है। ऐसा जातक शांत प्रकृति का होता है। उसे पैतृक धन न मिलें किन्तु वह ऐश्वर्य का स्वामी होता है। दूसरी तरह की धनरेखा सर्पाकार कोष्टक की आकृति बनाती है। ऐसा जातक योग्य, प्रतिष्ठित धनी होता है पर प्रायः लालची भी होता है।

9. संपत्ति रेखा

यह अंगूठे के नीचे जोड़ी में होती है और माथे पर लगे त्रिपुंड की आकृति बनाती है। ऐसे जातक बेहिसाब धन–संपत्ति के स्वामी होते है।

10. अपर रेखा

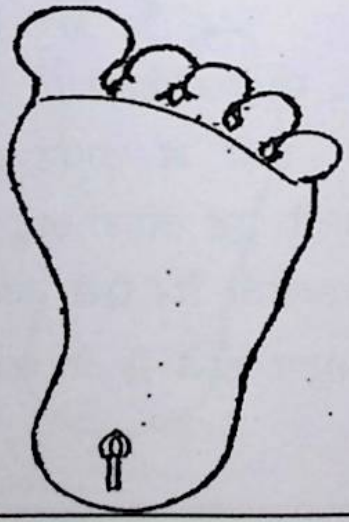

अंग्रजी में इसे मिनिस्टर लाईन कहते है। यह एक अटूट धनी, सुंदर रेखा अंगूठे और उंगलियों की जड़ों पर स्थित होती है। ऐसी रेखा वाले जातक को राज्य तो प्राप्त होता ही है। साथ में अगर पैर के मूल में वज्र चिन्ह भी हो, तब तो सोने में सुहागा समझें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. विद्या रेखा

विद्या रेखा गज रेखा के समान आड़ी लकीर होती है। ऐसा जातक परम विद्वान होता है।

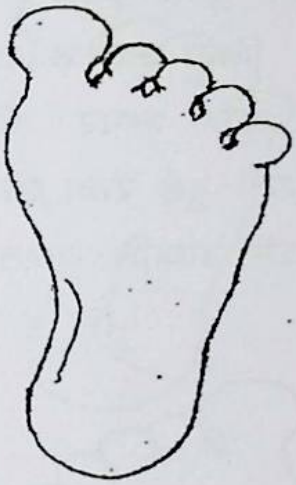

12. त्रिशूल रेखा

जिन जातकों के पैरों में त्रिशूल के आकार की रेखाएं बनती हों वह इष्ट बली और कहीं का नगर प्रमुख हो सकता है। यहि त्रिशूल पैर के बीच में हो तो जातक धर्मात्मा तथा महादानी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. तुला रेखा

जिस जातक के पैरों के तल में एड़ी से कुछ ऊपर अंग्रेजी का टी अक्षर बनाती हुई रेखा हो वह प्रायः व्यापार में अच्छी उन्नति करता है।

14. नैत्र रेखा

कनिष्ठिका के कुछ नीचे आदि रेखा आंख का आकार बनाएं तो जातक दूसरों के नेत्रों से देख सकता है और यदि कोई अन्य शुभ चिन्ह भी साथ में हो तो उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है।

15. नेता रेखा

अंगूठे से नीचे किन्तु तलवे के मध्य से कुछ ऊपर दो अर्द्धचंद्राकार रेखाएं हो तो जातक राजनीति के दाव पेंचों में माहिर होता है। यदि रेखा लंबी, साफ हो तो बहुत आगे बढ़ता है किन्तु यदि रेखा पर क्रास चिन्ह आ जाए तो असफल होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

16. भाग्योदय रेखा

एड़ी के कुछ ऊपर से शुरू होकर यदि यह रेखा गज रेखा से जा मिले तो जातक का विवाह भाग्याशालीनी स्त्री से होगा और उसकी किस्मत भी विवाहोपरान्त चमकेगी।

17. परोपकार रेखा

भाग्योदय रेखा के कुछ नीचे ही यह रेखा हो और यह भी यदि गज रेखा से मिले तो जातक धनी व उदार हृदय वाला होता है।

18. शंकु रेखा

एड़ी के बीच कोई रेखा जब शंकु जैसी आकृति बनाती है तो वह शंकु रेखा कहलाती है। ऐसे जातक प्रायः अस्थिर मति के होते है और अपना कार्य क्षेत्र बदलते ही रहते है। नौकरी, व्यापार में भी वे अधिक समय तक टिक नहीं पाते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

13. तुला रेखा

जिस जातक के पैरों के तल में एड़ी से कुछ ऊपर अंग्रेजी का टी अक्षर बनाती हुई रेखा हो वह प्रायः व्यापार में अच्छी उन्नति करता है।

14. नैत्र रेखा

कनिष्ठिका के कुछ नीचे आदि रेखा आंख का आकार बनाएं तो जातक दूसरों के नेत्रों से देख सकता है और यदि कोई अन्य शुभ चिन्ह भी साथ में हो तो उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है।

15. नेता रेखा

अंगूठे से नीचे किन्तु तलवे के मध्य से कुछ ऊपर दो अर्द्धचंद्राकार रेखाएं हो तो जातक राजनीति के दाव पेंचों में माहिर होता है। यदि रेखा लंबी, साफ हो तो बहुत आगे बढ़ता है किन्तु यदि रेखा पर क्रास चिन्ह आ जाए तो असफल होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

16. भाग्योदय रेखा

एड़ी के कुछ ऊपर से शुरू होकर यदि यह रेखा गज रेखा से जा मिले तो जातक का विवाह भाग्याशालीनी स्त्री से होगा और उसकी किस्मत भी विवाहोपरान्त चमकेगी।

17. परोपकार रेखा

भाग्योदय रेखा के कुछ नीचे ही यह रेखा हो और यह भी यदि गज रेखा से मिले तो जातक धनी व उदार हृदय वाला होता है।

18. शंकु रेखा

एड़ी के बीच कोई रेखा जब शंकु जैसी आकृति बनाती है तो वह शंकु रेखा कहलाती है। ऐसे जातक प्रायः अस्थिर मति के होते है और अपना कार्य क्षेत्र बदलते ही रहते है। नौकरी, व्यापार में भी वे अधिक समय तक टिक नहीं पाते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

19. वलय रेखा

एड़ी के ऊपर पदतल के बीच वर्तुल या वलय रेखा बनाए तो जातक अतुल संपदा व यश अर्जित करता है।

20. यव रेखा

अंगूठे की जड़ के निकट तिलक नुमा घूमती रेखा यव रेखा होती है। यह जातक का दरिद्रय दूर कर उसे धन–दौलत का मालिक बनाती है।

21. वैराग रेखा

एड़ी में हाथीं की सूंड जैसा आकार बनाने वाली रेखा के जातक प्रायः घर ग्रहस्थी छोड़कर साधु–संयासी बन जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ अशुभ रेखाएं

अभी तक हमने शुभ रेखाओं की चर्चा की। इससे यह अर्थ न निकालें कि जीवन में चारों ओर हरियाली ही होती है। मनुष्य के जीवन में सुख–दुःख, नफा–नुकसान, हार–जीत का चक्र चलता ही रहता है। यदि हमें अशुभ बातों का ज्ञान हो जाए तो उससे बचने के प्रयास किये जा सकते है। अब कुछ अमंगलकारी पदतल रेखाओं की चर्चा हम करते है।

1. आलस्य रेखा

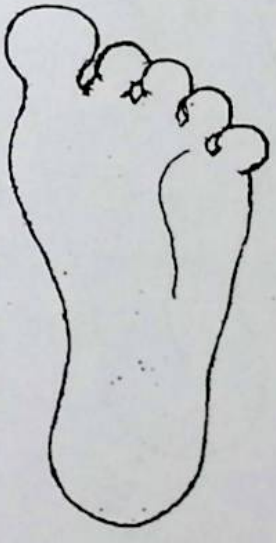

जब दानी रेखा अधिक लंबी हो जाए तथा मध्यमा की ओर जाने के बजाए अनामिका की तरफ मुड़ जाए तो वह जातक को सुस्त बनाती है। वह दानी–धर्म– कर्म करने वाला तो रहेगा पर हर काम को टालने का प्रयत्न करेगा और परिश्रम से जी चुराएगा।

2. कृपण रेखा

यह रेखा समृद्धि रेखा से कुछ हट कर होती है। यदि यह रेखा गुलाबी आभा से युक्त हो तथा पावं में अन्य शुभ लक्षण हो तो अच्छे परिणाम मिलते है, परन्तु इसका रंग नीला, काला या हरा हो तो जातक भयंकर कंजूस होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. चौर्य रेखा

अगर एड़ी के बीच से एक खड़ी रेखा चार अंगुल तक चल कर रूक जाए तो जातक चोर होता है।

4. मदाघूर्ण रेखा

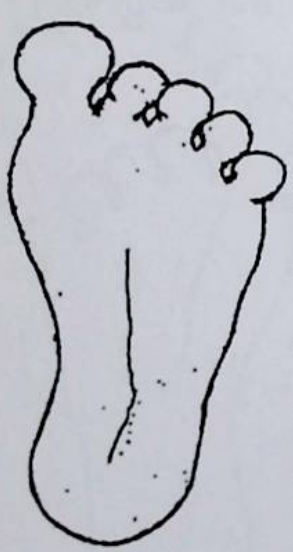

इसी प्रकार की एक रेखा लगभग हाथ की तर्जनी बराबर एड़ी से तलवे की बीचो–बीच ऊपर की ओर बिना कटी हुई हो तो जातक मद्यपानी, व्यसनी होता है। उसके संगी साथी नशेबाज होते है और वह परिवार का सुख चैन बर्बाद करता है।

5. दरिद्र रेखा

यह रेखा पैर के अंगूठे की सीध में खड़ी स्थिति में होती है। ऐसे रेखा वाले जातक अत्यंत दरिद्र होते है और कष्ट भोगते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. कृतघ्न रेखा

यदि कोई रेखा तलुए के बीच अंगूठे की ओर से निकलकर नीचे की ओर जाती हुई दो हिस्सों में विभक्त हो जाए तो जातक कृतघ्न और एहसान फरामोश होता है।

7. भोगी रेखा

कृतघ्न रेखा के ठीक विपरीत यदि कोई रेखा पैर के बीच अंगूठे की ओर से उदित होकर ऊपर जाती हुई दो भागों में बंट जाए तो जातक भोगी विलासी तथा विषय वासना में लिप्त होता है।

8. पाखंड़ रेखा

यह रेखा कनिष्ठिका अंगुली के नीचे होती है। ऐसे लोग ढ़ोंगी, क्रूर और दूसरों की प्रगति से जलने वाले होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. रोग रेखा

यह रेखा एड़ी में चित्रानुसार रहती है। ऐसे जातक जिंदगीभर किसी न किसी रोग से पीड़ित रहते है।

10. मूर्ख रेखा

कनिष्ठिका उंगली के बिल्कुल नीचे स्थित यह रेखा जिनके पदतल में होती हैं, वे मूर्ख, दुष्ट और जाहिल होते है।

11. कुविचारी रेखा

यह रेखा भी कनिष्ठिका उंगली के नीचे होती है। यदि कुछ दूर चलकर यह दो रखाओं में बंट जाए तो जातक शक्ल-सूरत से बड़े ही सज्जन, निरीह दिखाई देते है परन्तु असल में कुविचारी और विलासी होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. दुर्व्यसन रेखा

यह भी कनिष्ठिका से उदित होने वाली रेखा है। ये लोग अच्छा भाग्य लेकर पैदा होते है और देश–विदेश की सैर करते है, लेकिन ये बातें उन्हें व्यसनी बना देती है।

13. वृश्चिक रेखा

कई रेखाएं मिलकर अगर तलवे के बीच में बिच्छू की आकृति बनाएं तो जातक विपुल धन संपत्ति प्राप्त करता है परन्तु उसकी मृत्यु पानी में डूबने से होती है।

14. मिश्रफल रेखा

एड़ी से कई रेखाएं यदि निकलती हो तो परिणाम अलग–अलग होते है। दो ही रेखाएं हो तो जातक अतुल धन–दौलत पाता है। तीन हो तो उसके मन में कुविचार ही आएंगे। चार हो तो वह चोर होगा पांच हो तो राजा या शासक बनेगा और छः रेखाएं हो तो सिद्ध महात्मा बनेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

15. शिरस्फोट रेखा

यदि शिरस्फोट रेखा हो तो ऐसा जातक सामान्य मृत्यु का वरण नहीं करता अपितु उस पर किसी भारी वस्तु के प्रहार से सिर फटने के कारण उसका अंत होता है।

16. विदेश मृत्यु रेखा

अगर मध्यमा और अनामिका उंगलियों के बीच से रेखा निर्मित होती हो तो व्यक्ति की मृत्यु विदेश में होती है।

17. साहस रेखा

एड़ी में रेखा गदा जैसा आकार बनाए तो उसे साहस या गदा रेखा मानते है और ऐसा जातक शूरवीर तथा जांबाज होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

18. आत्महत्या रेखा

यदि अंगूठे और तर्जनी के बीच से रेखा का उदय हो और वह दो भागों में बट जाए तो जातक आत्महत्या करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्र

जातक के बारे में आधे से अधिक सूचना तो उसकी आंखे ही दे देती है। आंखें बहुत कुछ बोल जाती है। व्यक्ति के मन में क्या मंथन चल रहा है, वह उदास है, उल्लासित है, क्रोध में है यह उसकी आंखों से व्यक्त होता है। नेत्रों को हम चार भागों में बांट सकते है। भौहें, आंखे, पलकें और बरैनियां।

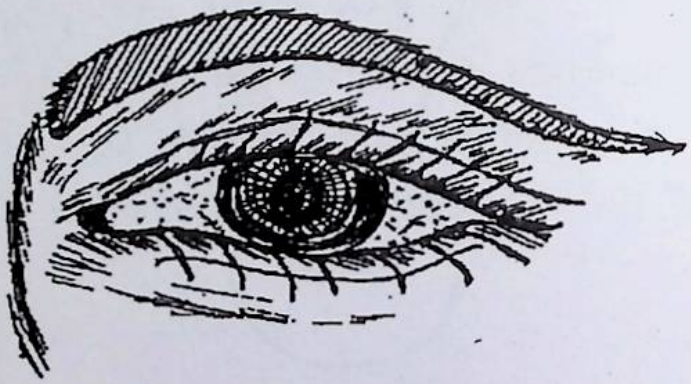

भौहें की आकृति, रंग को ध्यान से देखना चाहिये। घनी भौंहे अच्छे स्वास्थ्य की ओर इंगित करती है। ऐसे लोगों को मूत्र संबंधी बीमारियां कम होती है।

कमल सदृश नेत्र धनी लोगों के होते है, हल्के लाल डोरे हो तो और धन प्राप्त होगा, मांजार सद्रश नेत्र वाले कुकर्मी होते है, नीली आखों वाले क्रूर, हरी आंखों वाले जातक अविश्वसनीय होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेत्रों का सफेद भाग अत्यधिक सफेद हो तो वह भी दुर्गुण है। ऐसे लोग पर विश्वास नहीं किया जा सकता आंखों में किंचित स्निग्धता आवश्यक है वर्ना वे एकदम शुष्क होंगी।

जो लोग नीचे ही देखते रहते हैं वो या तो हीन भावना से ग्रस्त होते है या छल–कपटी हो सकते है। जिस महिला की आंखों में लाल ड़ोरे अधिक होते हैं वह उसी अनुपात में ज्यादा महत्वाकांक्षी होती है और लक्ष्य प्राप्ति हेतु कोई भी साधन अपना सकती है। लगातार आंखें मटकाना अभद्रता का परिचायक है और व्यक्ति की अस्थिरमति का संकेतक है।

यदि दोनों कानों तक एक ऐसी रेखा खींची जाए जो दोनों नेत्रों की पुतलियोंके बीचो–बीच चले और यह रेखा सीधी, सुस्पष्ट चले, कोई आंख उपर या नीचे न जाए तो जातक ज्ञानी, स्पष्ट वक्ता, धैर्यशाली, विवेकवान, संवेदी, जिम्मेदार तथा विचारों से संतुलित होगा।

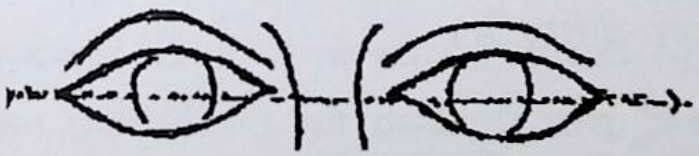

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि नेत्रों के अंदरूनी अर्थात नाक के निकट वाले किनारे माथे की ओर उठे हुए हो तो व्यक्ति उच्च कोटि का कवि,

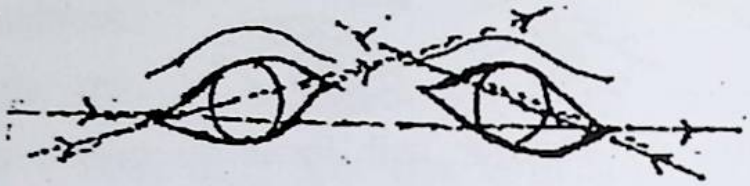

वैज्ञानिक या विचारक हो सकता है परन्तु उसमें व्यवहारकुशलता का अभाव होगा।

नेत्र कोर यदि नीचे की ओर झुके हो तो जातक कर्मयोगी, मेहनती व बुद्धिमान तो होगा मगर इन गुणों का उपयोग वह अपने भले के लिये करेगा।

यदि काल्पनिक रेखा के नीचे का आंखों का भाग ऊपरी भाग से कुछ ज्यादा बड़ा दिखे तो जातक में अस्थिरता, चंचलता, निठल्लापन का द्योतक है।

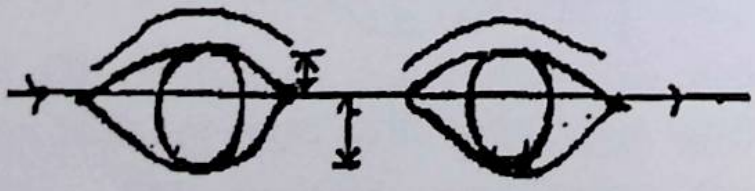

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ लोगों में जन्मजात में भैंगापन व अन्य प्रकार के

नेत्रदोष होते है जिनके कारण उनमें हीनता की भावना बढ़ जाती है। इस वजह से वे अनावश्यक रूप से आक्रामक भी हो सकते है।

कमल के पत्तों जैसे पीलापन लिये हुए शहद के रंग के नेत्र सुंदर माने गए है। ऐसे नेत्र जातक के आकर्षण, स्वास्थ्य, सुख, वैभव में वृद्धि करते है। अनारकली जैसे रंग व बनावट वाली आंखे हो तो व्यक्ति भोगी, कामुक व आचारविहीन होता है। अत्यधिक भोग विलास के कारण ऐसे लोग स्वयं का जीवन बिगाड़ लेते है। खालिस सफेद आंखें जिनकी पुतलियां एकदम काली हो वे कोमल स्वभाव के, दयालु व भोले होते है। ऐसी आंखों की स्वामिनी प्रायः स्त्रियां अधिक होती है।

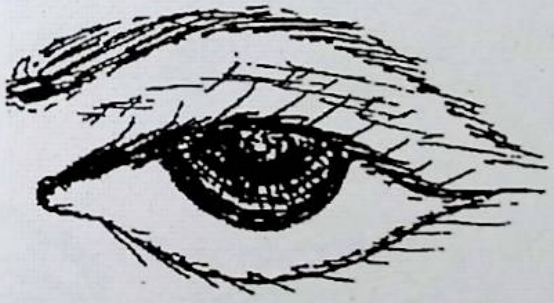

आंखे यदि कम लंबी व गोल हो और ऐसा लगे जैसे उन पर पर्दा सा पड़ा हुआ है तो प्रायः जातक मंदबुद्धि,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वार्थी होते है, उपर से आंखों का रंग भूरा हो तो वे यौन पिपासु भी होंगे। लंबी नीलवर्णी आंखें और उनमें कुछ लाल डोरियां हो तो जातक आत्मविश्वास से लबरेज, उत्तम स्वास्थ्य व जीवनशक्ति से परिपूर्ण होगा। ईमानदार व सच्चा होते हुए भी वह अपने श्रेष्ठ गुणों के कारण समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

आंखे असामान्य, अंदर की ओर धंसी, बहुत छोटी हो तो व्यक्ति के मक्कार, धूर्त, चिड़चिड़ा, होने की पूरी संभावना है।

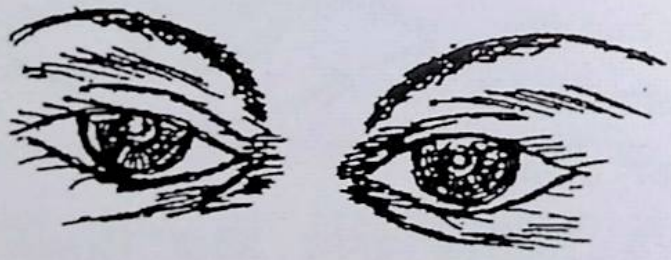

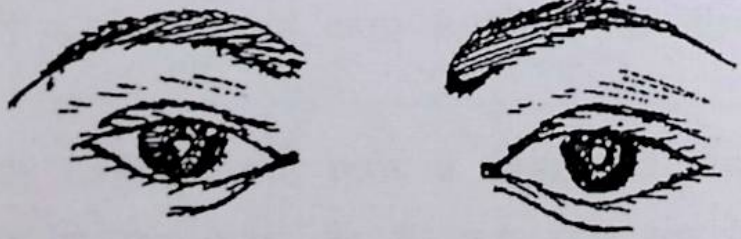

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौंहें

दोनों आखों के ऊपर बालों की एक पंक्ति भौंहों के नाम से जानी जाती है। नेत्रों से अलग होते हुए भी यह नेत्रों का एक अहम अंग है। चाहे जितनी सुंदर शक्ल हो, किसी की भौंहों का कतर दे तो वह तत्काल कुरूप लगने लगेगा। भौंहे भी व्यक्ति के स्वभाव, रूचि, चरित्र के विषय के बहुत कुछ कह जाती है।

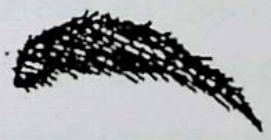

घनी भौंहे अच्छी समझी जाती है। ये यदि एकाएक सफेद हो जाएं तो उसे खतरे की घंटी से रूप में लेना चाहिये। जातक के जीवन पर आने वाले संकट की यह पूर्व सूचना है।

जिनकी भौंहों के बीच की दूरी सममतल व चौड़ी हो

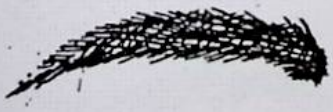

उनके जीवन का मध्यकाल सबसे अच्छा होता है। यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौड़ाई 1, 1/2 से 2 अंगुल के बीच होना चाहिये। यदि जातक का चेहरा अधिक चौड़ा है तो उसके अनुपात से भौंहे भी कुछ ज्यादा चौड़ी हो सकती है। ऐसा जातक धनी, सहृदय और खुशमिजाज होगा। जिन जातकों का यह भाग उठा हुआ या तीक्ष्ण हो वे जिंदादिल नहीं होते और एकांत में रहना पसंद करते है।

ज्यादा गहरी और झब्बेदार भौंहों वाले जातक अक्सर घमंड़ी, बलिष्ट और गुस्सैल होते है। और ये ऐब जिन लोगों में होते है उनमें मिश्रित गुण–दोष भी पाए जाते है, जैसे – ये लोग पैसा अच्छा कमाते है, पर उसे भोग विलास, बाहरी दिखावे में उड़ा भी देते है।

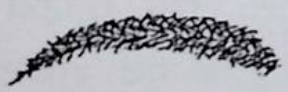

सिर की तुलना में भौंहों के बाल विरल हो तो जातक हंसने–हंसाने वाला हो सकता है।

यदि भौंहे ज्यादा लंबी है अर्थात नेत्रकोरों से भी कुछ अधिक हो तो वे जातक के गुणों में इजाफा करती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

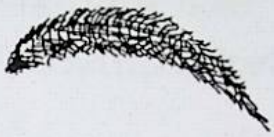

मध्य भाग में कुछ उन्नत और दोनों कोरों पर कुछ झुकी सी भौंहे इस ओर संकेत करती है कि जातक मध्यम वर्ग तथा औसत बुद्धि का है। ऐसा जातक मेहनती, मौका परस्त और नास्तिक होता है। इसके साथ पुतलियों का रंग भूरा हो तो जातक के दुगुर्ण बढ़ जाएंगे वह अधिक कठोर, भ्रष्ट व नास्तिक होगा।

भौंहे लंबी, 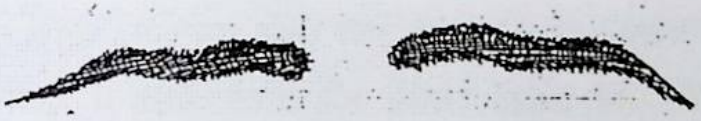
थोड़ी लहरदार, पतली और बीच में थोड़ी झुकी–दबी सी हो तो जातक हाजिर जवाब तथा वाकपटु होता है। इन लोगों की आंखे सामान्यतः सीधी, काली या नीली होती है। इनमें कुछ ऐसा चुबकीय प्रभाव होता है जो विपरीत लिंगधारी को आकर्षित करता है।

इससे मिलती–जुलती भौंहे वे होती है जो नाक के जोड़ से आरंभ होकर बिना लहर की आकृति बनाए लगभग सीधी कानों की ओर जाती है। यदि ये बीच में जुड़ी

हुई न हो तो जातक गंभीर, अध्ययन प्रिय, विचारशील, आस्तिक व धार्मिक होता है। ऐसी भौंहों के साथ यदि नेत्रों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की पुतलियां ऊपर की ओर चौड़ी हो तो जातक निःस्वार्थ सेवी, दानी, त्यागी भी हो जाता है।

भौंहें अगर अंदरूनी सिरों पर

उपर उठती हो तो जातक व्यावहारिक, प्रगतिशील किन्तु भौतिकतावादी होता है। उसकी प्रकृति कठोर हो जाती है। प्रायः इस प्रकार की भौंहों के स्वामियों के नेत्र लंबे एवं लालिमा लिये हुए प्रतीत होते है। अब यदि आंखें ऊपर की ओर चौड़ी व दूधियां प्रकाश से युक्त सी लगती हो तो जातक स्वप्न द्रष्टा, कल्पनाशील तथा वासना प्रधान होगा व गुप्त रोगों से ग्रसित भी हो सकता है।

अगर भौंहें घनी हो, नाक की संधि की तरफ पतली किन्तु कानों की ओर चौड़ी हो तो जातक वाकपटु, कूटनीति, जोड़–तोड़ में माहिर, यश, अपयश, गुप्तरोग एवं भोगी, प्रवृत्ति का होगा। प्रायः इस तरह की भौहों के साथ नयन विशाल, उभरे हुए होते है जो पद्माकृति बनाते या टेढ़े भी हो सकते है। इनका रंग मधुपिंगल अथवा लाल होता है और पलकें भी सघन होती है। अगर आंखे ऊपर उठती सी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो तो जातक विवेकशील, न्यायप्रिय और संस्कारवान होगा, किन्तु नीचे जाती हुई आंखें हो तो वह अन्यायी, क्रोधी तथा अविवेकी हो सकता है।

किसी किसी की भौंहे भू–मध्य में अलग नहीं रहती

बल्कि परस्पर जुड़ी रहती है, घनी होती है, बीच में चौड़ी और किनारों पर पतली होती है। ऐसे जातकों में महत्वाकांक्षा, कर्मठता और व्यावहारिक बुद्धि होती है, लेकिन साथ ही साथ ऐसे लोग विषयी, चंचल, संदेही और विलासी भी होते है। अतः कुल मिलाकर जीवन में सफल नहीं हो पाते। इन जातकों की आंखे बड़ी होती है परन्तु एकटक देखना उनके लिये कठिन होता है तथा आंखों से दुर्गुण छिप नहीं पाते और उनकी उन्नति बाधित होती है फिर भी यदि आंखों में तरलता व सफेदी हो तो वे कुछ हद तक सफलता का स्वाद चख लेते है पर ऐसे नेत्र स्त्रियों के लिये शुभ होते है।

भौंहे उलटें चुरूट की विशलेषणात्मक शक्ति, दम्भ, कर्कशता, कार्यक्षमता के गुण–दुगुर्ण पाए जाते है। यदि इन भौंहों के साथ नयन उपर्वगत हो तो दुर्गुण कम हो जाते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, सम हो तो बीच की स्थिति होती है और अधोगत होने पर गुणों का ह्रास होता है। इस प्रकार के लोग इतिहासकार एवं पुरातत्ववेत्ता होते है।

यदि भौंहे अन्दर की ओर बहुत नीची तथा बाहर की तरफ बहुत ऊंची व नुकीती हो तो जातक मन्दबुद्धि,

और प्रलापी होगा। पर अगर ऐसे जातकों की आंखे सम, सफेद और तरल हो तो कुछ संतुलन आ जाता है। यदि वे अद्योगत, पीत वर्णी, लाल डोरियों से युक्त तथा छोटी हो तो जातक नशेबाज, चरित्रहीन, निंदक, कुटिलमति तथा दूसरों पर निर्भर रहने वाला होगा। जातक स्त्री हो तो वह भी ईर्ष्यालु, शंकालु, चरित्रहीन तथा निसंतान हो सकती है। इनसे अतिरिक्त यदि आंखें भी चंचल, मलिन व गोल हो तो जातक की मूर्खता छिपाए नहीं छुपती, अच्छी लंबी, स्निगध आंखें दुर्गुणों को कम कर देती है तब जातक मनोरंजक, हंसोड़, व्यंग्यकार हो सकता है।

भौंहे यदि आंखों से सामान्य की अपेक्षा अधिक दूरी पर हो तो जातक अच्छी पसंद समझवाला, चुस्त एवं दुरूस्त होता है। इनका रूझान कला की ओर होता है। बेईमानी, ओछापन ये लोग बर्दाश्त नही कर पाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौंहे नेत्रों के अति निकट हो तो व्यक्ति चंचल, काइयां और अस्थिर होगा। भौंहे पतली हो तो वह सही राह पर चलेगा।

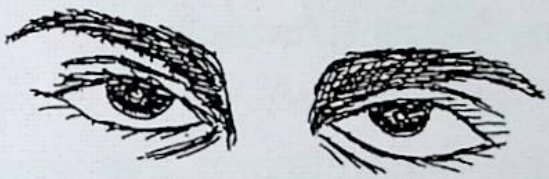

जिन जातकों की भौंहे बहुत विकल होती है वे प्रायः सुस्त, गंभीर व आलसी होते है। जितनी भौंहों की विरलता अधिक होगी जातक उतना ही धूर्त व कपटी होगा। वह विषयानुरागी भी होगा।

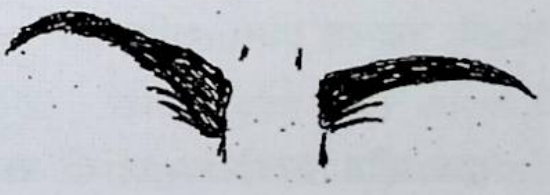

बहुत छोटी भौंहों वाले जातक महाक्रोधी और गलतिया निकालने में माहिर होते है। वे केवल अपना स्वार्थ देखते है। वे चाहते है कि अन्य लोग उनकी मदद करें पर ये स्वयं किसी की सहायता करने से बचते है।

भौंहे के बाल यदि नीचे की तरफ उगते हो तो जातक अल्पज्ञ व चपल विचारों वाला होगा। स्वयं तो वह खिन्न रहेगा दुसरों को भी नाराज करेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भौहें सघन हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि व वक्त की कीमत पहचानने वाला होता है। ऐसे जातक राजनीति के क्षेत्र में सफल हो सकते है और यदि सैन्य बलों में हो तो 35 वें साल में प्रगति करते है।

यदि भौंहों की जड़े भी आसानी से दिखाई देती हो तो व्यक्ति सदा उत्तेजित व त्रस्त रहेगा। बाह्य दृष्टि से ये लोग ढ़ीले–ढ़ाले लगते है पर ये चालाक व तीक्ष्ण बुद्धि के होते है। अपने चिड़चिड़ेपन तथा उतावलेपन के कारण ये दूसरों को नाराज कर देते है पर बाद में उनका क्रोध शांत भी कर देते है।

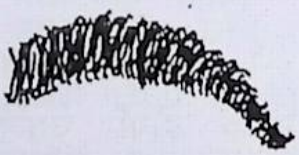

कुछ भौंहे उलटे धनुष के समान या तिकोनी होती है। ऐसे जातक स्वार्थी, घमंड़ी और दुष्ट होते है। दूसरों की भलाई का फायदा उठाने की ताक में रहते है। इनके विचारों में मौलिकता नहीं होती। यदि भौंहें आरंभ व अंत में नुकीली हो तो ये पक्के इरादों वाले पर क्रूर होते है।

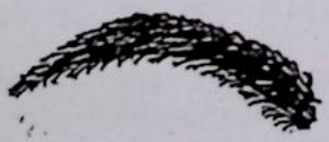

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आंखें

शक्तिशाली दृष्टि वालें आंखों से आंखे मिलाकर बात करने व अपनी राय तुरंत बना लेते है। वे आत्मविश्वासी होते है।

अस्थिर नजर वाले इसके ठीक विपरीत होते है और भूमि की ओर ताकते रहते है। अपने ख्यालों में डूबे रहते है और ख्याली पुलाव बनाते रहते है।

लपकी दृष्टि वाले वे लोग होते है जिन्हें पलकें लगातार लपकाने की या तो आदत पड़ जाती है या किन्हीं स्नायु विकारों के कारण वे ऐसा करते है। इनका मन मजबूत नहीं होता और मामूली कारणों से भी घबरा जाते है।

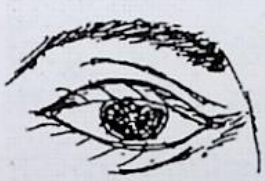

मोहक दृष्टि जिनकी होती है वे हर दिल अजीज होते है और सामने वाला उनकी दृष्टि से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। ऐसे जातकों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के विचार साफ–सुथरें और सुस्पष्ट होते है। ये हर अच्छी बात के कायल होते है चाहें वह आधुनिक हो या पुरातन।

आमंत्रक दृष्टि वालों की आंखें निमंत्रण देती सी प्रतीत होती है। ऐसे लोगों का चरित्र दुर्बल होता है। वासना व भोग विलास इनके लिये सब कुछ होता है।

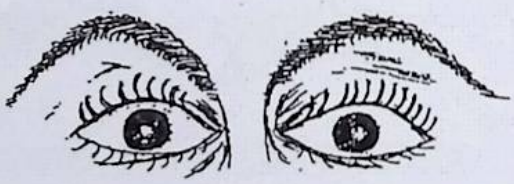

आग्नेय दृष्टि वालों की आंखों से क्रोध जैसे बरसता रहता है। ये छिद्रान्वेशी होते और सभी को भयभीत कर देते है। अपराधियों की नजरे ऐसी ही होती है। ये लोग गलत काम करके स्वयं दुःख उठाते है, व दूसरों को भी दुःखी करते है।

क्लान्त दृष्टि वाले सदैव थके से दिखाई देते है। प्रायः ये आलसी होते है और जीवन में असफल भी। ये कल्पनाशील तो होते है किन्तु इनकी कल्पनाएं क्रियान्वित नहीं हो पाती।

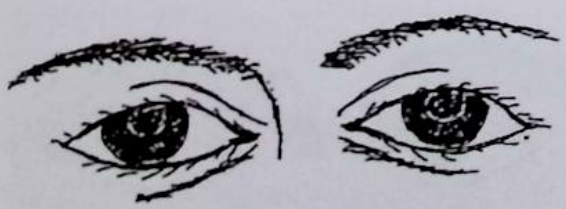

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वक्र दृष्टि या टेढ़ी नजर वाले कृतघ्न, कुटिल व स्वार्थ परायण होते है। ये किसी से मित्रता करते है तो वह भी स्वार्थ के कारण।

दृष्टि की भांति नेत्रों की आकृति पर भी ध्यान देना मुखाकृति विज्ञान के लिहाज से उपयोगी होगा।

आंखों की बनावट निम्नानुसार होती है।

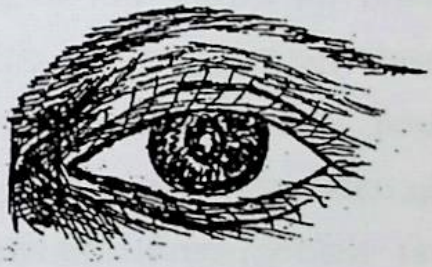

उग्राकार आंखों वाले जातक कुशल प्रबंधक और कई तरह के विचारों के जनक होते है। जीवन में ये सफल होते है, अच्छे दोस्त भी होते हैं। खतरों से ये ड़रते नहीं है। प्रायः ऐसे नेत्रों वाले लेखक, कवि, कलाकार होते है।

गोलाकार आंखें सुंदर होती है, पर जातक हठी और खुले दिमाग के होते है ये माहौल के अनुसार स्वयं को ढ़ाल लेते है। भावुकता इनका एक गुण होता है, परन्तु कई लोग निराशावादी भी हो सकते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिभुजाकार लोग मनमाफिक बात या काम न होने पर दूसरों से उलझ पड़ते है। वे वाचाल होते और ऊंची–नीची हांकते रहते है। ये अच्छे विक्रेता व विज्ञापक हो सकते है।

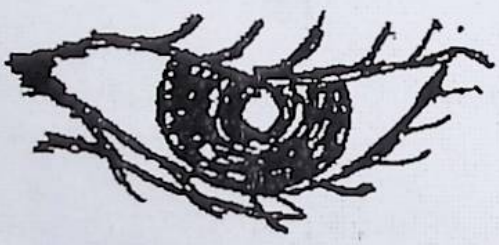

चंद्राकार से अभिप्राय दूज या तीज के चांद से है। इस किस्म की आंखों वाले काइयां, मतलबी और दूसरों का शोषण करने वाले होते है। ये सभी से लाभ उठाने में कुशल होते है। जिन महिलाओं के नेत्र ऐसे होते है उनमें यौनेच्छा अति प्रबल होती है।

आकृति आर्थात आकार का दूसरा पहलू प्रकार होता है। इस दृष्टि से विचार करने पर हम निम्न प्रकार की आंखें प्रायः देखतें हैं।

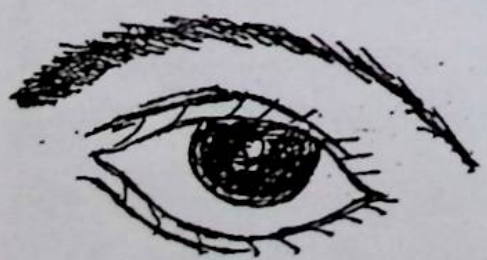

कुछ आंखों को हम चौड़ी कह सकते है। ऐसी आंखों वाले सर्तक, काबिल और खुशमिजाज होते है। प्रायः वे अपने जैसे लोगों से ही मैत्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करते है। कभी कभार भावनाओं के उमड़ने पर ये उखड़ भी जाते है। ये कार्यकुशल होते है और इनके संपर्क में आने वालों को भी लाभ पहुंचाता है। पर जरूरत से ज्यादा चौड़ी आंखे भी अशुभ होती है। उस हालत में व्यक्ति कूढ्मगज, लालची और हठी हो जाता है। दूसरों का उत्कर्ष उनसे सहन नही होता।

कुछ आंखों को छोटी कहा जा सकता है जिनके स्वामी हर काम नियम से करते है। ये अक्सर शर्मीले और अंतर्मुखी होते है। कभी–कभी उन्हें सनकी भी कहा जा सकता है। उनके काम में कोई नुक्स निकाले तो वे व्यथित होते है। ये अच्छे शिक्षक, वैज्ञानिक या चिकित्सक हो सकते है बशर्ते कि वे अपनी कमजोरियों को दूर करें।

तीसरा प्रकार परस्पर दूर स्थित आंखें है। इस प्रकार के जातक मिलनसार और आजाद ख्याल वाले होते है। ये किसी की बुराई करने से परहेज करते है। ये दूर की सोचते है पर प्रायः जीवन में सफल होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परस्पर नजदीक नेत्र वाले लोग अपनी ही दुनिया में जीते है, दूसरों से संबंध रखना उन्हें पसंद नहीं होता पर दूसरों की चुगली करने से नहीं चूकते। गंभीरता तथा अव्यवहारिकता इनकी विशेषताएं होती है। इनके मन की थाह लेना सरल नहीं होता।

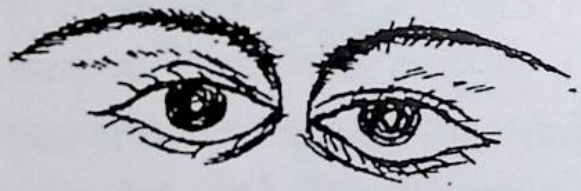

नासिका के पास आंखें जिनकी हो वे तंगदिल, फरेबी और बातूनी होते है। यें दूसरों को कष्ट में देखकर संतुष्ट होते है। बात–बात में मिथ्या भाषण करना इन्हें प्रिय होता है।

मोहिनी आंखें उन्हें कहते है जिनकी नीचे की पलक के पास हल्का सा उभार होता है। ये लोग व्यवहार कुशल होते है। ये खुले दिलवाले होते है और अपने मनोभावों को छिपाते नहीं है बल्कि इनकी याददाश्त अच्छी होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्तुल आंखों के मालिक चकाचौंध भरी बेफिक्र और अयाशी की जिंदगी जीने के इच्छुक होते है। ये उन्मादी भी होते है लेकिन यदि उपर की पलक नीचे तक आए तो इनमें किंचित गंम्भीर्य आ जाता है और कई दुर्गुण कम हो जाते है।

उर्ध्वगत नेत्र में आंखें ऊपर की ओर कुछ झुकी होती है। ऐसे जातक स्वयं की क्षमता पर भरोसा रखते और आशावादी होते है। दूसरों के हित अनहित के प्रति सतर्क रहते है। ये वैसे तो शांत रहते है पर कोई अकारण व्यक्तिगत प्रतिकूल टिप्पणी करें तो साक्षात परशुराम का रूप लेते है।

अधोगत नेत्रों का झुकाव नीचे की ओर होता है तथा ऐसे जातक हर कार्य सोच विचार कर करते है। परन्तु अन्य लोगों के काम में दोष निकालना व उनकी आलोचना करने में इन्हें सुख मिलता है। अतः निरीक्षक, विश्लेषक जैसे कार्यो के लिये ये उपयुक्त होते है जहां दोष ढूढ़ने की विशेषता की आवश्यकता हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरल नेत्रों में कोई झुकाव नहीं होता। वे सम होते है इनके स्वामी उतार चढाव वाला जीवन पसंद नहीं करते। जरा सी बात पर दुःखी, उदास हो जाते है। ऐसे लोग जीवन में पर्याप्त सफल नहीं हो पाते क्योंकि संघर्ष का ही दूसरा नाम जीवन है।

गहरे नेत्र वाले जातक अपने मन की बात हृदय में छिपाकर रखते है। ये जजबाती नहीं होते और इन्हें समझना कठिन होता है। यदि गहराई नासिका के निकट हो तो जातक अच्छा खिलाड़ी या निशानेबाज हो सकता है। ये लोग स्थिरचित तथा सहनशील होते है। व्यावहारिक होने के कारण ये फैसला लेने में विलंब नहीं करते है।

दमकते नेत्र दर्शाते है कि व्यक्ति मस्ती में है और प्रसन्न चित्त रहते है। ये लोग महफिलों की शान होते है क्योंकि अपनी मस्त तबीयत से कैसे भी माहौल को खुशनुमा बना देते है। अतः वे स्वयं प्रसन्न रहते है और दूसरों को भी प्रसन्न रहने के लिये प्रेरित करते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंचल नेत्र स्थिर नहीं रहते अतः उनके स्वामी भी एकाग्रचित्त नहीं होते। परिणामस्वरूप इन लोगों में चारित्रिक दृढ़ता नही होती। प्रेम में भी ये ईमानदार नहीं होते। अस्तु ये लोग स्वभाव से ही विश्वासघाती और बेईमान होते है।

अड़िग नेत्र स्थिर और भावशून्य होते है। जातक जिन्दगी से ऊबा हुआ परेशान हाल नजर आता है। जो लोग बहुत अच्छा समय देखने के बाद एकाएक परिस्थितिवश बर्बाद हो जाते है या किन्हीं अन्य कारणों से ऐसा पतन देखते है उनके मन में वैराग्य का स्थायी भाव घर कर जाता है। हालात उन्हें तनहाई में जीना सिखा देते है और वे मौज मस्ती के वातावरण में असहज महसूस करने लगते है।

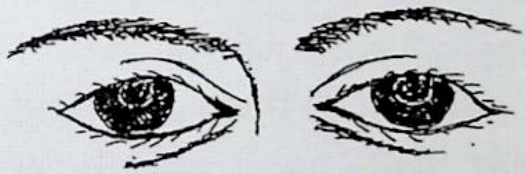

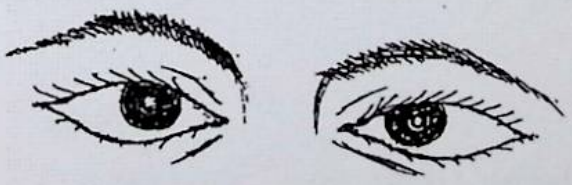

उपरोक्त विवरण सामान्य नेत्रों का है। कुछ लोग भैंगे होते है जिनकी दृष्टि में दोष होता है। साधारणतः ऐसे लोग कपटी, प्रवंचक, चालाक और नीच स्वभाव के होते है। वे एहसान फरामोश होते और अपनों को भी धोखा दे सकते है। खुद ऐसा आचरण करते है मानों वे जन्मजात साधु है परन्तु हकीकत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में उन्हें भेड़ की खाल में भेड़िया कहना उपयुक्त होगा।

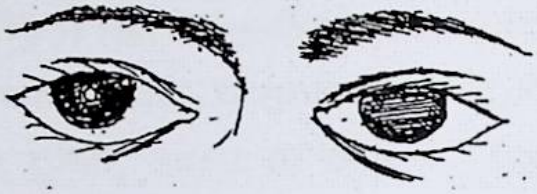

कुछ अभागों की एक ही आंख होती है जिन्हें बोलचाल की भाषा में काना कहते है। प्रायः ये भी धूर्त व बेईमान ही होते है। मुख में राम बगल में छुरी की कहावत को ये चरितार्थ करते है।

अन्धत्व के विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। कुछ जन्म से ही नेत्रहीन है तो किन्हीं की आंखें दुर्घटनाओं, चेचक आदि बीमारियों के कारण चली जाती है। परन्तु ये लोग अमूमन निरीह, ईमानदार और संवेदनशील होते है। धर्म व संगीत के प्रति इनमें लगाव अक्सर पाया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आंखों का रंग

काला

काली आंखों वाले प्रायः बुद्धिशील, दूरदर्शी होते है। वे शिष्टाचार का महत्व समझते है और सही फेसले करते है। यह हमारा भ्रम है कि ज्यादातर लोगों की आंखे काली होती है। दरअसल चटक काली आंखे कम लोगों की होती है और अधिकांश लोगों की आंखों में हल्का भूरापन होता है। काले नेत्र अच्छे स्वास्थ्य का भी प्रतिनिधित्व करते है।

भूरा

आंखों का रंग यदि गहरा भूरा हो तो जातक प्रेमी होगा। ये दोस्ती निभाना जानते है और अपने परिजनों से भी लगाव रखते है और रंग यदि हल्का भूरा हो तो ऐसे व्यक्ति आकर्षक परन्तु कुछ अस्थिर भी होते है। जाने या अनजाने ये सामने वाले को दुःख पहुंचा सकते है।

स्लेटी

स्लेटी या राख जैसी आंखों के स्वामी बुद्धिमान और कल्पनाशील होते है। ये बाहर से शांत पर अंदर से चतुर और सतर्क होते है। ऐसी आंखों वाली स्त्रियों में यौनेच्छा के प्रति उतावलापन होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरि

हरि आंखों वाले खोजी प्रकृति के होते है किसी भी कार्य या बात को ये तत्क्षण समझ लेते है और निपटा देते है। ये अपनी मनोदशा को सफलता पूर्वक छुपा लेते है। कुछ अधिरता इनमें होती है पर ये कुशल अन्वेषक या अनुसंधानकर्ता होने की योग्यता रखते है।

नीला

नीली आंखों वाले अक्सर रसिक और नर्म स्वभाव के होते है। इनका प्रेम स्थिर होता है तथा जीवन साथी को संतुष्ट रखते है किन्तु यदि आंखों का रंग हल्का नीला हो तो वे थोड़ें अस्थिर होते है। प्रेम का मतलब इनके शब्द कोष में मौज–मस्ती से अधिक कुछ नहीं होता। स्त्री जातक को यौन संतोष जल्दी नही मिलता।

पलक

पलक, पक्ष्म या बरौनी समानार्थी शब्द है। पलकों के

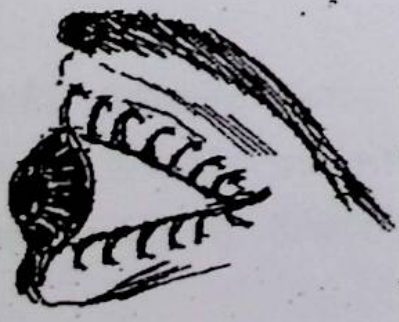

बाल सघन, महीन और यामवर्णी हो तो शुभ होता है। इससे जातक की सुरक्षा, दीर्घायु व विश्लेषणात्मक गुणों में अभिवृद्धि होती है। गंभीर प्रकृति के लोगों की पलके कम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झपकती है। जिनकी पलकों के झपकने में 15 से 25 सेकंड़ का अंतराल होता है वे लोग दार्शनिक, स्थिरचित्त तथा विवेकी होते है। इनमें लक्ष्यों के प्रति एकाग्रता होती है। जिनकी पलकें जल्दी–जल्दी झपकती है वे अस्थिर मति, शंकालु व मूर्ख होते है। भारी पलकें चिंताओं, परेशानियों को व्यक्त करती है। बहुत ही कम पलक झपकाने वाले प्रायः असामान्य या मानसिक दृष्टि से असंतुलित होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaipole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh